॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

सितम्बर, 2013 वर्ष 16, अंक 9 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2070 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 20

यदि ऋषि दयानन्द न होते तो ?

❒ श्री हरिचन्द्र वर्मा 'वैदिक'

धर्म और वेदों के सत्यार्थ को कोई न समझ पाता। सब सायण आदि के वेद भाष्य को ही प्रमाणित मानते। सायण मुसलमानी समय में हुआ था, उसके भाष्य में पौराणिक छाया थी और महीघर तान्त्रिक था। दोनों ने वेद भाष्य करते समय निरूक्त का सहारा नहीं लिया, दोनों ने प्रचलित संस्कृत के नियमों से ही वेदार्थ किया, जिसका अनुकरण यूरोपीय विद्वानों ने भी किया। वेदों के शब्द यौगिक हैं और उनके वास्तविक अर्थ तभी प्राप्त हो सकता है, जब उन्हीं नियमों से उनका अर्थ किया जाता है। इन दोनों ने पाणिनि-व्याकरण, निरूक्त तथा निघण्टु की उपेक्षा की। जिन मन्त्रों का उपनिषद् तथा ब्राह्मण ग्रन्थकारों ने अर्थ कर दिया था, उन अर्थों की भी उन्होंने अवज्ञाकर पौराणिक एवं तान्त्रिकों जैसा अनर्थ किया, इस विद्या की पुस्तक वेद को साधारण पुस्तकों की कोटि से भी गिरा दिया। मन्त्र का पूर्ण बोध न होने के कारण लोगों ने वेद विरूद्ध अन्धपरम्पराओं को ही सही मानने लगे। 18वीं शताब्दी के पूर्व से ही 'वेद ज्ञान से रहित लोगों ने उन मन गढ़न्त मान्यताओं को शिराधार्य किया तथा अनेक प्रकार के तथाकथित भगवान, धर्म, पन्थ, मत, सम्प्रदाय कुकुर मुत्ते की भाँति पैदा हो गये। जितने भगवान पैदा होते गये, उतना ही अनाचार उत्तरोत्तर बढ़ता गया।

उस समय आर्यावर्त के किसी ने यह साहस नहीं दिखाया कि सायण आदि के अर्थ को एक ओर रखकर वेदों का सही अर्थ करे। ब्राह्मण लोग भी विचार शक्ति से हीन थे, सब लकीर के फकीर बने हुए थे किसी में योग्यता नहीं थी। ऐसे में जब ऋषि दयानन्द गुरु विरजानन्द की कुटियों में पहुँचे तब वेदों का व्याकरण अष्टाध्यायी, निघण्टु आदि का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात जब गुरु से विदा होने लगे तब गुरु दक्षिणा के समय उनके गुरु जी ने कहा कि भारत वेद विद्या को भूल गया है, उसका अनर्थ किया गया है इसीलिए सब कुरीतियों, कुसंस्कारों में फंसे हुए हैं, जावो सबको सत्यमार्ग का दर्शन कराओ, यही हमारे लिए सबसे बड़ी गुरुदक्षिणा होगी।

जब ऋषि ने देखा कि वेदार्थ को समझने के लिए जो निरुक्त निघण्टु, उपनिषद तथा ब्राह्मण ग्रन्थ हैं बिना उनके सायण, मही धर आदि ने वेदों के सही अर्थ समझने में बड़ी भूल की है। तब ऋषि दयानन्द ही ऐसे महापुरुष थे जो निर्भय होकर प्रबल स्वर में कहा-वेदों का अनर्थ किया गया है। वेद विद्या की पुस्तक है, इसे सिद्ध करने के लिए उसके सत्यार्थ को सबके सामने रख दी और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा सत्यार्थ प्रकाश के द्वारा सबकी आंखे खोल दी तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि का अर्थ क्या है इन सबके सम्बन्ध में सत्यासत्य निर्णय करने की नई जागृति उत्पन्न कर दी। क्रमशः सब समझने लगे और विदेश के भी विद्वान मान गये कि वेद वास्तव में सब सत्य विद्या की ही पुस्तक है। अमेरिका के विद्वान थोरोन भी कहा है- Off all the so-called revelations, the vadas are the only ones whose principlus are base on reason and sciecne.

अर्थात्- ईश्वरीय ज्ञान कही जाने वाली किताबों में केवल वेद ही ऐसे हैं जिनके आधार तर्क के सिद्धान्त पर हैं। संसार के सब मतों में केवल वैदिक धर्म ही ऐसा है जिनमें सृष्टि क्रम के नियमों के अनुकूल सिद्धान्त पाये जाते हैं, इसलिए विज्ञान से वैदिक धर्म का विरोध

टंकारा में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव

दिनांक 26, 27, 28, फरवरी 2014

27 फरवरी 2014 को होने वाले मुख्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे।

श्री पूनम सूरी जी

(प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नहीं होता।

जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता उस देश के लोग 'एरण्ड' को ही प्रधान मानते हैं ऐसे ही जर्मन देश के मैक्समूलर साहब को ही बड़ा विद्वान् सब मानते थे। पर जब ऋषि दयानन्द वेदों को लेकर प्रकट हुए तब सभी को ज्ञात हो गया कि मैक्स मूलर साहब संस्कृत के कोई खास विद्वान नहीं थे। उन्होंने भी वेदों का यथा योग्य अर्थ नहीं किया है-

प्रो. भवानी लाल भारतीय ने आर्य संसार' के स्वर्ण जयन्ति विशेषांक में लिखा है कि- ''जिस प्रकार प्रो. ए.ए. मैक्डॉनल ने ऋग्वेद में आये 'पूषा' देवता के संकेत के तत्वार्थ को न समझकर उनको गडरियों का गीत कहा, उसी भांति मैक्समूलर भी वेदों को भेड़ चराने वालों तथा कृषकों के सीधे भावों को व्यक्त करने वाले गीत कहे तो उन्हें कौन रोक सकता है।

वेद में एकेश्वरवाद है या बहुदेववाद, इस विवाद में स्वयं को अलग थलग रखकर मैक्स मूलर ने वेद के संदर्भ में एक नये शब्द को गढ़ा, यह था हीनेथीज्म। इस शब्द के द्वारा वह यह दिखाना चाहता था कि वेदों में न तो शुद्ध एकेश्वरवाद है और स्पष्ट बहुदेववाद। अपितु जो वेद मन्त्र जिस देवता को स्तुति करता है, वह उस स्थान पर उसे ही सर्वोच्च घोषित कर देता है।

हमारा निवेदन है कि प्रो. मैक्समूलर को इस नये शब्द को गढ़ने की आवश्यकता ही क्या थी। निश्चय ही जिन वेदमन्त्रों में अग्नि, इन्द्र, मित्र, वरूण आदि देवताओं का स्तवन है, वह उस एक परमेश्वरीय सत्ता के ही विभिन्न नाम है जो उसका तत्तत् विभूति, शक्ति, गुणों तथा महत्व के द्योतक हैं अत: ये सभी मन्त्र प्रकारान्तर से एक परमात्म देव की ही स्तुति करते हैं। श्री अरविंद ने अपने प्रसिद्ध लेख दयानन्द एण्ड वेद में मैक्समूलर के इस नव आविष्कृत हीनोथीज्म का उपहास करते हुए वैदिक एकेश्वरवाद को वेद का निर्विवाद सिद्धान्त माना है।''

मैक्समूलर साहब वैदिक 'अश्व' का अर्थ घोड़ा' किया है जबकि उसका अर्थ 'अग्नि भी है, देखिये-'अश्वनंत्वावारवन्तम्विदंध्या अग्निं नमोभि:। (ऋग्वेद) अर्थात् अश्वं का अर्थ अग्नि है। वेदमन्त्रों का अर्थ जहां जैसा होना चाहिए वहां उसके विपरीत अर्थ किए हैं। इसलिए वे योरोपदेश के लिए विद्वान हो सकते हैं आर्यावर्त्त देश के लिए नहीं।

वैदिक 'अज' का अर्थ अन्नादि पदार्थ है, 'मेघ' का अर्थ 'यज्ञ' है, इससे सिद्ध हुआ कि यज्ञाग्नि में अन्नादि सामग्रियों से होम करना चाहिए। स.प्र. एकादश समु. में ''ब्राह्मण ग्रन्थों में, अश्वमेध-गोमेध, नरमेघ आदि जो मंत्र हैं उनका सत्यार्थ इस प्रकार है:- **'राष्ट्रं वा अश्वमेध:।** शत. 13.01.06.3। .... गौ5। शत 4.3.1.25।। **अग्निर्वाअश्व:।।** शतपथ ब्राह्मण।। अर्थात-घोड़े, गाय आदि पशु तथा मनुष्य मार के होम करना नहीं लिखा, केवल वाम मार्गियों के ग्रन्थों में ऐसा अनर्थ लिखा है, किन्तु यह भी बात-वाम मार्गियों ने चलाई और जहां-जहां लिखे हैं, वहां-वहां भी वाममार्गियों ने प्रक्षेप किया है। देखो! राजान्याय धर्म से प्रजा का पालन करे, विद्यादि का देने हारा यजमान और अग्नि में घी आदि का होम करना 'अश्व मेध। अन्न, इन्द्रियां, किरण, पृथिवी आदि को पवित्र करना, 'गोमेध।' जब मनुष्य मर जाय तब उसके शरीर का विधिपूर्वक दाह करना 'नरमेध' कहाता है।'

यदि ऋषिदयानन्द न होते तो क्या होता? विद्वान लोग, उनके वेदादिभाष्य के अनुकूल सत्यासत्य का निर्णय कर पाते। यदि ऋषि दयानन्द होते तो आर्य समाज भी न होता। सृष्टि विस्तार का मूल तत्व-ईश्वर, जीव और प्रकृति का ज्ञान न हो पाता और न वैदिक 16 संस्कार विधि को कोई जान सकता। यदि वे न होते तो सामाजिक सुधार के अन्तर्गत बालविवाह का निषेध विधवा विवाह का प्रचलन-शुद्धि संस्कार का समर्थन, जातिपाति, छूत-छात का उन्मूलन न होता। जन्म गत जाति को कर्मगत-जाति में परिवर्तन का ज्ञान किसी ने न दिया होता, वेद विरुद्ध प्रतिमा पूजन और वेदानुकूल वैदिक यज्ञ और अष्टांग योग का सही ज्ञान किसी को न होता। नारी शिक्षा के लिए कन्या विद्यालय, वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय का अधिकार उस समय के ब्राह्मणों ने न दिया होता। यदि ऋषि दयानन्द न होते तो सत्य धर्म को जानने एवं पोप लीलाओं को खत्म करने के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' जैसी कसौटी की रचना संसार के लिए किसी भी मतवालों ने नहीं दिया होता।

''भद्रंकर्णेभि: शृणुयामदेवाभद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:।
स्थि रैरंगेस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितंयदायु:।।

(यजु.25.21)

ऋषि दयानन्द ने इस यजुर्वेद के भाष्य में इस मन्त्र का कितना सुन्दर स्पष्टीकरण किया है-''जो मनुष्य विद्वानों के साथ विद्वान होकर कानों से सिर्फ सत्य वचनों को ही सुने, जो कुछ भी सत्य पदार्थ है, संसार में, वह सब अपनी आंखों से देखे। असत्य को न देखे न सुने। सत्य को देख सुनकर वो भद्रतापूर्ण व कल्याणमय जीवन व्यतित कर सकते हैं। स्वस्थ एवं सुदृढ अंगों वाले शरीर से पूर्ण आयु को सुखपूर्वक प्राप्त करें। जगदीश्वर की सच्चीस्तुति करे झूठी स्तुति की प्रशंसा न करें।''

ऐसे ही ऋषिदयानन्द सत्यनिष्ठावान महात्मा थे, उनके सिद्धान्त में सृष्टिक्रम के विरूद्ध बातों का स्थान नहीं था। वे सत्य विद्या के समर्थक थे। धार्मिक ग्रन्थों में जो प्रक्षिप्त बातें थीं उन्हें वे नहीं मानते थे। वेद को स्वत: प्रमाण मानते थे और उनके महानग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना में तो ऐसा जादू है, जो निष्पक्ष रूप से मन ध्यान से पढ़ता है उसे त्रैतवाद (ईश्वर, जीव और प्रकृति का तो ज्ञान होता ही है, साथ ही सही धर्म का भी ज्ञान हो जाता है, उसके मन से अविद्या और कुसंस्कार रूपी भूत का भय नष्ट हो जाता है। वह एक ऐसा मशीन है जो चावल में मिले हुए कंकड़ पत्थरों को अलग कर देता है। वह लाखों लोगों को आर्य बना चुका है।

ऋषि दयानन्द के विचार केवल वैदिक धर्म को सत्य सिद्ध करना नहीं था, बल्कि उन्होंने समाज एवं अपने देश की स्वतन्त्रता, एकता के बारे में भी मन्त्र व्यक्त किया था। ऋषि के तपस्वी जीवन की एक-एक घटना शिक्षा मूलक है- चपत द्वारा नवीन वेदान्त खण्डन (ऋषि जीवनी से) खन्दोई ग्राम का छतर सिंह जाट नवीन वेदान्ती था। एक दिन वह महाराज से नवीन वेदान्त पर वार्त्तालाप करने लगा। महाराज की अकाटय् युक्तियों से निरुत्तर होकर उसने कहा ''महाराज! आप चाहे जो कहें, परन्तु सत्य तो यही है कि जगत् मिथ्या है।'' महाराज ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया, परन्तु आगे बढ़कर उसके कपोल पर एक चपत लगा दिया। इस पर वह क्रोध होकर कहने लगा कि आप जैसे ज्ञानी पुरुष को केवल मत भेद से चिढ़कर चपत नहीं लगाना चाहिए था। महाराज ने कहा चौधरी जी। जब जगत मिथ्या है और ब्रह्म के अतिरिक्त कोई वस्तु है ही नहीं, तब वह कौन है जिसने आपको चपत लगाया?'' छतर सिंह जो युक्ति से नहीं माना था, वह चपत खाकर सीधा हो गया। उसके

(शेष पृष्ठ 18पर)

यही ठीक है

व्यावहारिक जीवन में कहा सुना जाता है कि अमुख व्यक्ति कुछ कार्य नही करता या अमुख व्यक्ति बहुत लालसा रखता है । कुछ व्यक्ति सारा दिन अनथक परिश्रम करते हैं जिसे हम कहते हैं कि पशुओं की तरह कार्य करना । प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ अवश्य कार्य कर रहे हैं और वही उनका कर्म है परन्तु सबसे श्रेष्ठ कर्म करने का माध्यम क्या है इसे ही विस्तृत रूप से आगे समझने का प्रयास एक उदाहरण से करेंगे।

हमारा शरीर एक वाहन के रूप मे है। वाहन का भारी हिस्सा हमारे तन की तरह है इस वाहन में दो इंजन कार्य कर रहे हैं एक मन और दूसरा बुद्धि। परमात्मा हर वाहन (शरीर) में ईधन का कार्य करता है इसके वगैर कोई भी वाहन (शरीर) नही चलता । यहाँ यह समझना बड़ा महत्वपूर्ण है कि वाहन में ईधन का वाहन की गतिविधियों से कोई लेना देना नहीं। वाहन अच्छा कार्य कर रहा है। सेवा के कार्य कर रहा है। वाहन को चोरी करने के लिए प्रयोग करना है। इसका ईंधन से कोई वास्ता नहीं। ऐसे ही मनुष्य के कर्म करने के दो प्रेरणाश्रोत है एक मन और दूसरा बुद्धि, मन छोटे बच्चों की तरह है वह कभी भी स्थिर नही रहता, चंचल है, प्रमादी है, बलवान है, जिद्दी है। मनबुद्धि तक को अपना कार्य नहीं करने देता। बुद्धि बार-बार दरवाजा खटखटाती है लेकिन द्वार खोलता ही नहीं। मन के द्वारा किये गये कार्य आरम्भ में मीठे लग सकते है परन्तु कार्य के उपरान्त पछतावा भी हो सकता है। मन भावुक हो जाता है, ज्ञान/बुद्धि से कोसों दूर हो जाता है। बात को और सरलता से समझने के लिये, एक मधुमेह से पीडित व्यक्ति का मन प्रायः मीठा खाने को करता है बुद्धि उसे रोकती है लेकिन मन से प्रभावित हो मीठा खा लेता है। प्रारम्भ में खाने से खुशी होती है लेकिन अन्त में नतीजा अच्छा नही होता आप सभी जानते है परन्तु दूसरा माध्यम बुद्धि के रास्ते से जाता है जिसमें ज्ञान है, तर्क है, वितर्क है। इस रास्ते में समय अधिक लग सकता है। प्रारंभ में कठिनाई भी हो सकती है। परन्तु जो मनुष्य बुद्धि का प्रयोग करते हुये कार्य करते हैं वह बुद्ध और जो बुद्धि का प्रयोग नही करते वह बुद्धू। बुद्धि सोच, विचार-विमर्श द्वारा कार्य करने का संदेश देती है। बुद्धि द्वारा किया गया कार्य आरम्भ में समस्याएं दे सकते हैं परन्तु बाद में तृप्ति का आभास अवश्य होता है।

परन्तु कार्य करने का सही तरीका शब्दों में ही निहित है। हिन्दी भाषा में कार्य के ही पर्यायवाची हैं। जैसे क्रिया, कर्ता और कर्म। वह कार्य जो हो रहा है परन्तु कोई जोश नहीं, कोई होश नहीं, इस तरह के आलसी कार्य को तामसी कहा गया है उदाहरणतया जैसे खाना तो हम खा रहे हैं पर मन टी वी में लगा हुआ है, क्या खाया कुछ पता नहीं चला। यह कार्य कर्म नही मात्र क्रिया है। तामसिक कार्य करने वाला खुद तो मस्त रहता है परन्तु उसके आस-पास के लोग भी अकसर बहुत दुखी रहने पर मजबूर हो जाते हैं, कुछ काम बड़ी काम भावना से किए जाते हैं उसमें अत्यधिक इच्छा और कामना का तड़का लगा होता है। इस तरह कार्य करने के बाद सफलता मिले तो सुख, अन्यथा दु:ख का ही अनुभव होता है। इस तरह के कार्य को राजसिक कार्य कहा जाता है। राजसिक काम करने वाले व्यक्ति खुद तो अस्त व्यस्त रहते हैं, परन्तु उनके आसपास के लोग खूब मस्त रहते हैं। कार्य की परिकाष्ठा में व्यक्ति क्रिया से ऊपर उठकर वास्तविक कर्म की तरफ अग्रसर हो जाता है। यह ऐसे कार्य है जो निष्काम भाव से किये गये कार्य होते है। सेवा के कार्य बिना किसी महत्वकांक्षा से किये गये कार्य है। परिवार के लिए किए गए कार्य जो दायित्व अथवा कर्त्तव्य के अन्तर्गत आते है। किसी सहायता के लिए किए गए कार्य शास्त्र उसे वास्तविक कर्म के नाम से प्रतिपादित करते हैं। योगीराज कृष्ण ने गीता में लिखा है। वह कार्य करें जिसे बुद्धि और मन का सहयोग मिले, वह उत्साह रहित, ग्लानि रहित होता है। सात्विक कार्य करने वाला खुद भी सुखी रहता है और आस पास के लोगों को भी सुखी रहते हैं। किसी विद्वान ने कहा है, मन की कामनाओं के तीर को बुद्धि की कमान में कसकर एक दिशा तो दीजिए, आप की दिशा ही बदल जायेगी। परन्तु मन की कामनाओं के तीर को जरा भी बुद्धि की कमान में ढीला और दिशाहीन किया तो सच कहता हूँ दुर्दशा हो जायेगी। अजमा कर देखों, बताये गये उपाय, आप पायेंगे कि न सिर्फ काम करने में मन लग रहा है। अपितु जीवन में रस पहले की अपेक्षा बढ़ रहा है। इसीलिए यह ठीक है।

अजय टंकारावाला

सिकंदर और चोर

एक बार सिकंदर के फौजी पड़ाव में एक चोर ने रात को चोरी करने का प्रयास किया। सिकंदर के सैनिक हर वक्त सजग रहते थे, इसलिए उन्होंने पूरी मुस्तैदी दिखाते हुए उसे पकड़ लिया। सुबह सैनिक ने उसे सिकंदर के सामने पेश किया। सिकंदर इस बात के लिए हैरान था कि आखिर किसी ने ऐसी हिम्मत कैसे की? सिकंदर ने कड़क कर उससे कहा-तुम कैसे बदतमीज हो? कैसे अनैतिक व्यक्ति हो, जो चोरी करने जैसा घृणित काम करते हो। यह सुनकर चोर बिना डरे बोला-आपको मुझसे ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। जैसा एक बड़ा भाई, छोटे भाई के साथ व्यवहार करता है, वैसा व्यवहार करें। सिकंदर ने कहा- तू मेरा छोटा भाई कैसे हो सकता है? चोर बोला- तुम बड़े चोर हो, तुम्हारे पास ताकत है इसलिए दुनिया तुम्हें मानती है। हम छोटे चोर हैं, हमारी शक्ति कम है, इसलिए हम छोटी-छोटी चोरी करते हैं जिस कारण दुनिया हमें मानती नहीं बल्कि दंडित करती है। तुम भी करते वही हो, जो हम करते हैं। तुम बड़े डाके डालते हो। तुम डाके न डालो तो राजा कैसे बनोगे? बड़े से बड़े राजा भी चोरी करते हैं। हां, उनकी चोरी स्वीकृत है क्योंकि बड़े चोर हैं और ताकतवर चोर हैं, इसलिए वे हड़प लेते हैं तो उसका जीत कहा जाता है। समाज उन्हें मान्यता देता है क्योंकि समाज उनकी ताकत से डरता है। जो ताकतवर कह दे, वही कानून बन जाता है। कम ताकतवर सजा भोगते हैं और ताकतवर अपनी चोरी का पुण्य लूटते हैं, मजे करते हैं। राजन, न्याय सभी के लिए समान होना चाहिए। जो गलत हैं, अनैतिक है, उसका विरोध प्रत्येक स्तर पर होना चाहिए। चोर की बात सुनकर सिकन्दर बहुत लज्जित हुआ। उसने चोर को तत्काल छोड़ने का हुक्म दिया।

अंग्रेजी का वर्चस्वः हमारी मानसिक गुलामी

❒ डॉ. रघुवीर वेदालंकार

15 अगस्त को हम पूरे जोश से स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाते हैं। मनाना भी चाहिए, किन्तु यह कौरी स्वाधीनता कि हम अपने ही देश के एक भाग कश्मीर में भारत माता की जय का नारा नहीं लगा सकते। जिस क्रूरता के साथ वहां के स्थायी निवासी पण्डितों को वहां से खदेड़ा गया, ऐसा तो अंग्रेजी राज्य में भी नहीं हुआ था। अंग्रेजी भाषा तथा संस्कृति ने आज जनमानस को जकड़ लिया है। कहा जाता है कि अंग्रेजी के बिना विज्ञान सम्बन्धी तथा अन्य क्षेत्रों में भारत उन्नति नहीं कर सकता। यद्यपि यह कहना छलावा मात्र है क्योंकि चीन आदि देश अपनी ही भाषा में वो वैज्ञानिक उन्नति भी कर रहे हैं। तथापि ज्ञान-विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए अंग्रेजी का विरोध नहीं। इसे विद्यालयों, महाविद्यालयों में बढ़ाया जाए तथा इसके बल पर आधुनिक लाभ लिए जाएँ, किन्तु अंग्रेजी की आड़ में अपनी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रिय भाषाओं की वो उपेक्षा न की जाए। हमारे दैनिक व्यवहार में हमारी प्रांतीय भाषाओं तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी का ही वर्चस्व रहे, तभी यह भारत भारत रह सकेगा, अन्यथा सब कुछ अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत के प्रभाव में आ रहा है तथा आ जायेगा।

हमारी मानसिक दासता तो देखिए कि अंग्रेजी के प्रचार पर हम अपनी भाषा को भी बिगाड़ रहे हैं बिल्कुल आंख मीचकर। उदाहरण-वही दूर दृष्टि से दिल्ली में विशाल क्षेत्र को आवासीय बनाकर उसका नाम 'रोहिणी' रखा गया। अंग्रेजी में इसका अनुवाद Rohini ही बनेगा। क्योंकि 'ण' है ही नहीं। इसी Rohini का पुन: हिन्दी में अनुवाद 'रोहिनि' किया गया जो आज दिल्ली की बसों आदि में देखने को मिल जाता है। भारतीय शब्द योग को योगा बनाकर पुन: इसे हिन्दी में भी योगा लिखा तथा बोला जाने लगा। कैसी मानसिक गुलामी है हमारी कि हम शब्दों की शुद्धता पर भी ध्यान नहीं देते। इसी प्रकार मुम्बई को Bombay कहना भी ऐसा ही है।

राम को Rama रामा तथा कृष्ण को Krishnana कृष्णा बना डाला। एक दिन मेरे प्रधानाचार्य ने सभा में मेरा नाम अंग्रेजी लहजे में रघुवीरा कह दिया। मैंने तुरन्त प्रतिवाद किया कि मैं पुरुष हूं। रघुवीरा तो स्त्री लिंग है। प्रधानाचार्य नाराज हो गये। अब नहीं अंग्रेजी काल से ही हम इस दासता को बिना विचारे ही ढोते चले आ रहे हैं। दिल्ली या देहली को सब जानते हैं कि इसका यही नाम था किन्तु अंग्रेज इसका शुद्ध उच्चारण करने में असमर्थ थे। अत: वे Delhi ही कहते थे। हमने भी उसे ही अपना लिया। अन्यथा देहली की स्पेलिंग तो Dehli ही होगी, दिल्ली की Delhi होगी। प्रयाग राज का नाम मुसलमानों ने बदलकर इलाहाबाद कर दिया किन्तु अंग्रेज सुगमता से अंग्रेजी में इसका उच्चारण नहीं कर सकते थे। अत: उन्होंने इसे Allahabad अल्लाहवाद बना डाला, अन्यथा शुद्ध अनुवाद तो Elahabad था। हम आज भी इन दोनों शहरों तथा इनके समान कुछ अन्यों की भी भ्रष्ट स्पेलिंग लिखते चले आ रहे हैं। क्या कारण है? बौद्धिक दरिद्रता। अंग्रेजी के अनुसार पत्रों में Dear कहकर सम्बोधित किया जाता है। हिन्दी में भी इसका अनुवाद 'प्रिय' हमने ग्रहण कर लिया तथा राजकीय भाषा में प्राय: इसी का प्रयोग किया जाता है। यदि पत्र लिखने वाला अपने से बड़े को पत्र लिख रहा हो या कोई महिला किसी पुरुष को पत्र लिख रही हो। बड़ी ही अजीब लगता है यह जबकि हमारी भाषा दरिद्र तो नहीं है। यहां पर छोटे के लिए तथा महिला अपने पति के लिए ही प्रिय का सम्बोधन करती है, अन्यथा आदरणीय, श्रीमान महोदय आदि सार्थक शब्द हमारे यहां सम्बोधन के लिए हैं। यह तो लिखने-पढ़ने की बात रही। सामान्य बोल चाल की भाषा में भी अंग्रेजी इतनी हावी हो गयी है कि हम अपनी भाषा के शब्दों की उसी प्रकार देने लगे हैं, जैसे मृत कलि को उसके परिवार वाले। यह स्थिति भयावह है।

उदाहरणार्थ प्रात: नाश्ते के स्थान पर ब्रेक फास्ट, भोजन को लंच तथा डिनर, शौचालय को लेटरीन, स्नानागार को बाथरूम, भुगतान को पेमेंट, पत्र को लेटर, उद्यान को पार्क, डाकघर को पोस्ट ऑफिस, कार्यालय को ऑफिस, विश्वविद्यालय को यूनिवर्सिटी, प्रधानाचार्य को प्रिंसिपल, नौकर को सर्वेंट, चपरासी को पियोन, अध्यापक को मास्टर आदि कहने में ही गौरव समझते हैं। हिन्दी शब्दों के उपयोग में हीनता अनुभव करते हैं इसी प्रकार के अन्य भी अनेक अंग्रेजी शब्द ऐसे हें जिन्हें बोलकर हम अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रिय भाषाओं की जड़ें काट रहे हैं। भाषा ही नहीं, भाषा की तरह अंग्रेजी क्रियाकलाप भी हमारी दिनचर्या का अनिवार्य अंग बनते जा रहे हैं। जन्मदिवस पर हवन न करके केक काटना तथा 'हैप्पी बर्थडे टू यू' की ध्वनि करना, हमारी आदत बन गयी है। 'जन्मदिन की शुभकामनाएं कहने में हमें हीनता दिखलायी देती है। यह भाषा कैसी दरिद्र है, थोड़ा सा दृष्टिपात कीजिए। दिल्ली में एक कॉलोनी है 'गुरु तेग बहादुर नगर'। अति गौरवपूर्ण नाम है जिसमें हमारे गुरु का नाम जुड़ा है किन्तु अंग्रेजी में इसे जी.टी.बी. नगर बना दिया गया। गुरु जी लुप्त हो गये। हिन्दी में इसका संक्षिप्तीकरण गु. तेग.बहा. नगर होता तो गुरु जी तो स्मरण रहते। इसी प्रकार मध्यप्रदेश के ताँत्या नगर को टी.टी. नगर बना दिया गया जैसे कि वहां पर रेलवे के टी.टी. ही रहते हो। हिन्दी में इसे ता. टोपे नगर लिखा जाता तो इतिहास पुरुष की स्मृति भी हमें रहती। सरकार तो ऐसा कर ही रही है, रोकना तो उसे भी चाहिए किन्तु हमें अपने व्यवहार में वो अंग्रेजी शब्दों को विच्छु के समान दूर रखकर यथाशक्ति राष्ट्र भाषा हिन्दी के या क्षेत्रिय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। अपने पत्र तथा निमन्त्रण पत्र भी हिन्दी या क्षेत्रिय भाषाओं में भेजने चाहिए।

- बी-266, सरस्वती विहार, दिल्ली-34

टंकारा में आगामी बोधोत्सव 2014

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन बुधवार, वीरवार, शुक्रवार 26,27, 28 फरवरी 2014 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप तिथियां अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

- रामनाथ सहगल, ट्रस्ट मन्त्री

त्याग से मुक्ति की ओर

❐ रमेश चन्द्र पाहुजा

यदि हम अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाते हैं तो देखते हैं कि ईश्वर की इस विशाल सृष्टि में सब ओर यज्ञ ही यज्ञ चल रहा है और वह भी यज्ञ की भावना से। यज्ञ का बहुत ही व्यापक अर्थ है। प्रत्येक कार्य जो त्याग की भावना से, अपने पराये का भेद मिटाकर, विश्व-स्तर पर लोक-कल्याण के लिए, परोपकार के लिए किया जाता है, यज्ञ कहलाता है। प्रत्येक कार्य जो ईश्वर से जोड़ता है, यज्ञ कहलाता है। प्रजापति परमात्मा ने सृष्टि की रचना यज्ञ के द्वारा ही की। सर्वप्रथम उसने प्रकृति को जो सत्, रज् और तम् की साम्यावस्था है, गति प्रदान कर सृष्टि को बनाया। इसके उपरान्त त्याग-भाव से वह सृष्टि हम सब जीवों को सौंप दी। क्यों सौंप दी? महर्षि पतञ्जलि योगदर्शन के माध्यम से उद्बोधित करते हैं: **'भोगापवर्गार्थम् दृश्यम्'** अर्थात् यह कार्य-रूप सृष्टि हमारे उपभोग और मोक्ष प्राप्त करने के लिए साधन के रूप में प्रदान की। इसमें ईश्वर का अपना स्वार्थ नहीं है।

हम सभी भलीभांति जानते हैं कि 'यज्ञ' शब्द 'यज्' धातु से बना है जिसका अर्थ है देवपूजा, संगतिकरण और दान। अपने मुख्य विषय की परिधि में रहते हुए, संक्षेप में देव-पूजा का अर्थ है चेतन और जड़ देवों की पूजा। चेतन देवों यानि माता-पिता, गुरुजन आदि के बताये हुए श्रेय मार्ग पर चलना, उनकी तन-मन-धन से सेवा-शुश्रूषा करना और उनके मान-सम्मान और दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं का ध्यान रखना। यह तभी सम्भव है यदि हममें त्याग की भावना हो। जड़ देवों यानि पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और प्रकाश की पूजा का माध्यम है अग्निहोत्र क्योंकि अग्नि ही देवताओं का मुख है। हम हवन कुण्ड की प्रचण्ड अग्नि में घृत और औषधि युक्त सामग्री की आहुति डालते हैं। यह तभी सम्भव है यदि हम हवन-कुण्ड में द्रव्यों का त्याग करें। यही त्याग की भावना समस्त सृष्टि में झलक रही है।

जब हम अग्निहोत्र करते हैं तो निम्नलिखित मन्त्रों का भी उच्चारण करते हैं। **1. ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदम् अग्नये इदम् न मम॥, 2. ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा। इदम् वायवे इदं न मम॥ 3. ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा। इदम् आदित्याय इदं न मम॥**

अर्थात् ये द्रव्यों की आहुति अग्नि के लिए है मेरे लिए नहीं। अब अग्नि देव स्वार्थी नहीं है जो अर्पित द्रव्यों को अपने पास ही रख लें। वह उसे कई गुणा करके, सूक्ष्म रूप में वायु देव को दे देते हैं। सूर्य देव भी उस आहुति में कई प्रकार का योगदान देते हैं और सृष्टि में आदान-प्रदान-त्याग का यह क्रम आगे इस प्रकार चलता है: **4. ओ३म् पर्जन्याय स्वाहा। इदं पर्जन्याय इदं न मम॥, 5. ओ३म् भूमये स्वाहा। इदं भूमये इदं न मम॥ 6. ओ३म् प्राणीभ्यः स्वाहा। इदं प्राणीभ्यः इदं न मम॥**

इस प्रकार से हमने देखा कि कैसे हमारे द्वारा अल्प मात्रा में दी गई आहुति, प्रभु द्वारा निर्मित सृष्टि-क्रम के अन्तर्गत, कई गुना होकर त्याग-भावना से भरपूर, अन्त में धरती माँ द्वारा सारे प्राणी जगत को प्राप्त हो जाती हैं यह त्याग की भावना, इदम् न मम की भावना ही यज्ञ के प्राण हैं। यह महत्वपूर्ण बात महर्षि उद्दालक ने राजा जनक को बताई थी। उन्हीं के अनुसार संक्षेप में यज्ञ की आत्मा है स्वाहा और यज्ञ का सार है: सुरभि सुगन्धि एवं यश की प्राप्ति।

इस प्रकार हमने भलीभांति जान लिया कि यज्ञ के भिन्न-भिन्न रूपों में एक ही मुख्य मूल भावना है और वह है त्याग की।

त्याग का एक और महत्वपूर्ण पहलू है एषणाओं का त्याग। पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा का त्याग। इन सभी एषणाओं से हम भली-भांति परिचित हैं। एक साधारण पारिवारिक आत्मा के लिए, अपने शरीर रूपी रथ को चलाने के लिए और आज के भौतिक संसार में कुछ सीमा तक सफलता प्राप्त करने के लिए एषणाओं को होना स्वाभाविक है। परन्तु हमें सावधान रहना होगा कि हमारी इच्छायें केवल मूल आवश्यकताओं जैसे रोटी, कपड़ा, मकान और परिवार का भलीभांति पालन-पोषण करने तक ही सीमित रहें, ऐसा न हो कि ये वासनाओं का रूप धारण कर लें। जब एक गृहस्थी अपनी एषणाओं की पूर्ति कुछ अंश तक कर चुका होता है तो उसे इस संसार की निःसारता, परस्पर सम्बन्धों का वास्तविक ज्ञान भी होने लगता है। जीवन के अनुभव, कटु सत्य उसे साधना के पथ पर अग्रसर होने में सहायक सिद्ध होते हैं। उसका विवेक जागृत हो उठता है और वह वैराग्य, अभ्यास की ओर बढ़ निकलता है। एक उच्च संस्कारिक आत्मा के लिए विवेक, वैराग्य और अभ्यास को प्राप्त करने हेतु, इस मार्ग से गुजरना आवश्यक नहीं है। अत: हमें धीरे-धीरे अनावश्यक एषणाओं का त्याग करते जाना चाहिए।

इसके उपरान्त त्याग का एक और महत्वपूर्ण पहलू है और वह है अहंकार का त्याग। सर्वप्रथम हमें जानना होगा कि हमें अहंकार क्यों हो जाता है? जब कोई मनुष्य यह अनुभव करने लगता है कि वह किसी गुण-विशेष अथवा वस्तु-विशेष की उपलब्धि में दूसरों से आगे है, उस जैसा कोई और नहीं है तो इन्हीं विचारों के कारण, वह व्यक्ति अहंकार का शिकार हो जाता है। फलस्वरूप अपना सन्तुलन खो बैठता है। छोटों के प्रति घृणा और बड़ों के प्रति अवहेलना का व्यवहार करने लगता है। प्राय: हमें अभिमान होता है अपनी विद्या का, योग्यता का, धन-सम्पत्ति का, अपनी और अपने स्वजनों की सत्ता का, अपने शारीरिक बल और सौन्दर्य का और इतना ही नहीं अपनी उपासना का भी। किसी भी नाव को डुबोने के लिए उसमें एक ही छिद्र बहुत है। इसी प्रकार से जीवन रूपी नाव का डूबोने के लिए अहंकार रूपी छिद्र ही बहुत है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि Every pride hath a fall! अहंकार अपने आप में ही एक बहुत बड़ा विषय है। परन्तु हमें भली-भांति समझ लेना चाहिए कि जहां अंहकार है वहां निराकार नहीं हो सकता। जैसे ही मैं, मैं, मैं की समाप्ति होगी, वैसे ही तू ही तू, तू ही तू का शुभारम्भ हो जाता है।

अब हम बढ़ते हैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण त्याग की ओर, वह है मानसिक त्याग। हम भली-भांति जानते हैं कि हमारे जीवन का अन्तिम लक्ष्य है, परमानन्द की प्राप्ति, मुक्ति की प्राप्ति, मुक्ति का स्वरूप स्पष्ट करते हुए वेदमाता कहती है: **यत्र अनुकामं चरणम्** (ऋग्वेद)। अर्थात जिस अवस्था में आत्मा अपनी इच्छानुसार, स्वतन्त्रापूर्वक विचरण कर सके, वही मुक्ति है। इसके विपरीत दु:ख का क्या स्वरूप है? महर्षि मनु जी का सन्देश है: **सर्वं परवशं दु:खम्।** (मनु.) अर्थात् सभी प्रकार की पराधीनता, बन्धन दु:ख है। अब हम अपना ही परीक्षण-निरीक्षण करते हैं। क्या हमारी आत्मा स्वतन्त्र है या पराधीन? कहीं आत्मा

कर्मपाश के बन्धन में बन्धा हुआ, जन्म-मरण के चक्रव्यूह में तो नहीं फंस गया? क्या हमारी आत्मा रथी है या मन ही रथी बन बैठा है? प्राय: 'मन' के वश में ही नाच रहे होते हैं और यह बन्धन का कारण बन जाता है।

इस सन्दर्भ में एक बोध-कथा है कि एक बार राजर्षि जनक महर्षि अष्टावक्र जी से धर्म-चर्चा कर रहे थे। एकाएक महाराज जनक ने ऋषि के सम्मुख ईश्वर-दर्शन की इच्छा प्रकट की। महर्षि अष्टावक्र जी ने कहा कि प्रभु-प्राप्ति के लिए आपको अपना सर्वस्व ही मुझे सौंपना होगा। विदेही जनक ने शीघ्र ही यह प्रस्ताव मान लिया और अपना सारा राजपाट, धन-दौलत आदि ऋषि को अर्पण कर दिये। महर्षि मुस्कराये और बोले क्या तुमने अपना सर्वस्व त्याग दिया है, क्या सब कुछ मुझे दे दिया है? राजा जनक सोच में पड़ गये और बोले मेरे मन के अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नहीं है। ऋषि ने मुस्करा कर कहा कि अपना मन भी मुझे दे दो तो झट से मैं तुम्हें प्रभु-दर्शन करा दूंगा। अरे कैसा अमूल्य प्रस्ताव है यह! कठोपनिषद् के यमाचार्य जी का भी तो यही सन्देश है: **अनित्यैः द्रव्यै प्राप्तवानस्मि नित्यम्. ... (कठो.)** अर्थात् अनित्य द्रव्यों के द्वारा मैंने नित्य को प्राप्त कर लिया। कितना उत्तम व्यापार है? अनित्य, विनाशी और क्षण भंगुर मन को त्याग कर, नित्य, अविनाशी और शाश्वत प्रभु को पा लेना। इन विनाशी पदार्थों को तो वैसे भी समाप्त हो जाना था। यदि मन का त्याग करने से, समर्पण करने से प्यारे प्रभु के दर्शन हो जायें, तो फिर और चाहिए ही क्या? परन्तु त्याग उसी वस्तु का किया जाता है जो अपनी है। क्या वास्तव में मन पर हमारा अधिकार है? इसी प्रसंग में एक बोध-कथा का वर्णन इस प्रकार से है-

एक साधक सन्त अपने प्रिय सखा से मिलने के लिए अपनी कुटिया से निकलें अभी थोड़ी दूर गये ही होंगे कि एक व्यक्ति जिसने कन्धे पर भारी-भरकम बोझा उठा रखा था, अचानक ही उनसे आ टकराया। सन्त-महात्मा के कन्धे पर बहुत चोट लगी। अभी वह सम्भले ही थे कि वही व्यक्ति वापिस मुड़ा और सन्त-महात्मा को बुरा-भला कहने लगा। ''क्या अन्धे हो गये थे, क्या देख कर नहीं चल सकते आदि-2?'' वह साधक चुपचाप आगे बढ़ते गये परन्तु मन में एक चिन्तन आरम्भ हो गया। 'कैसा मूर्ख प्राणी है, एक तो गलती की और फिर मुझे ही बुरा-भला कह रहा है। यह तो वही बात हुई जैसे उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। इसी उधेड़बुन में कुछ ही आगे निकले थे कि एक नन्हा बालक जो साईकिल चलाना सीख रहा था, उनसे आ टकराया परन्तु वह बालक शीघ्र ही महात्मा जी के पांव पड़ अपनी गलती के लिए क्षमा मांगने लगा। महात्मा जी ने प्रसन्न होकर, उसे उठाया और क्षमा करते हुए प्यार करने लगे। इन्हीं दो घटनाओं का स्मरण करते-करते वह अपने मित्र की कुटिया में पहुंच गये। उनके मित्र ने उनके मन की दशा को भांप कर उनकी कुशलता के विषय में पूछा। महात्मा कह उठे, ''आज मेरी 25 वर्ष की साधना मिट्टी में मिल गई है और सारा वृतान्त कह सुनाया। एक व्यक्ति के कटु वचन कहने से मेरा मन दु:खी हो गया और एक नन्हें बालक के मीठे वचनों से प्रसन्न हो गया। क्या यह मन मेरा है या इस संसार का है?'' साधना के पथ पर चलने के लिए यह अति आवश्यक है कि हमारे मन पर हमारा ही आधिपत्य हो।

अब प्रश्न उठता है कि मन तो बहुत ही चंचल है। एक ही क्षण में रामायण काल में पहुँच जाता है तो दूसरे ही क्षण भविष्य में सपनों में खो जाता है। इसे आत्मा अपने वश में कैसे करे? हम जानते हैं कि आत्मा अपने सारे कार्य किसी न किसी उपकरण के द्वारा ही करती है। मन से शक्तिशाली कौन सा उपकरण है जिसके द्वारा मन को जीत लिया जाये। छान्दोग्य उपनिषद् में एक बोध-कथा आती है कि एक बार इन्द्रियों में परस्पर झगड़ा हो गया कि सबसे शक्तिशाली कौन है? हर कोई अपने आपको दूसरे से अधिक महत्वपूर्ण दर्शाने का प्रयत्न करने लगा।

अन्त में सब प्रजापति परमात्मा के दरबार में पहुंच गये और अपनी समस्या उनके सम्मुख रख दी। ईश्वर ने उन्हें एक उपाय सुझाया कि एक-एक कर के तुम इस शरीर से बाहर निकल जाओ जिसके शरीर में से निकल जाने पर शरीर कार्य करना बन्द कर दे वही शक्तिशाली है। सर्वप्रथम अपने आपको सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए, आँख शरीर से बाहर निकल गई। परन्तु शरीर बिना आँख के भी चलता रहा। इसी प्रकार मन सहित सब इन्द्रियां बारी-बारी शरीर से बाहर निकलने लगी परन्तु शरीर जैसे तैसे चलता ही रहा। अब बारी आई ''प्राण'' की। जैसे ही प्राण शरीर से बाहर निकलने लगा, सब इन्द्रियां शिथिल पड़ने लग गई, मृत तुल्य हो गई। अन्त में सबने अपनी हार मान ली और प्राण को सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली घोषित कर दिया गया। कहने का भाव यह है कि प्राण मन से भी अधिक शक्तिशाली है और आत्म प्राण के द्वारा मन को अपने वश में कर सकती है। इसीलिए योगी-जन हमें निर्देश देते हैं- **मरूद्भिः इन्द्र सख्यं ते अस्तु।** हे जीव, हे इन्द्र! तेरी मित्रता प्राणों के साथ होनी चाहिए क्योंकि प्राण सब इन्द्रियों का स्वामी है। अथर्ववेद द्वारा भी यही सन्देश है-**प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे।** अर्थात् प्राण को नमस्कार जिसके वश में सब कुछ है।

अब प्राणों के साथ मैत्री कैसे की जाये? यह सम्भव है केवल और केवल प्राणायाम के द्वारा ही। इस प्राण-शक्ति को वश में करने में मन वश में आ जाता है, आयु दीर्घ होती है और मृत्यु के समय कोई क्लेश नहीं होता। मृत्यु को समीप अनुभव करता हुआ, यह आत्मा मन के द्वारा प्रभु चरणों में समर्पित हो, प्राणों को अनायास बाहर फैंक देता है यानि प्राणों को त्याग कर मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। स्वामी दयानन्द जी ने भी अपनी अन्तिम घड़ी में, इसी प्रकार अपने प्राणों को त्याग, मृत्यु को जीत लिया था।

इस प्रकार हमने जाना कि कैसे उस प्रभु की विशाल सृष्टि में सब ओर यज्ञ ही यज्ञ चल रहा है जिसमें मूल भावना है त्याग की। यदि हम परमानन्द की प्राप्ति करना चाहते हैं तो आईए उस ईश्वर की सृष्टि से शिक्षा ग्रहण करें। हम त्याग करें पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा का। त्याग करें अहम् का, अहंकार का और फिर धीरे-धीरे मन को प्राणों के द्वारा वश में करते हुए, अर्पित कर दें प्रभु के चरणों में। यह मन का त्याग, समर्पण ही हमें मोक्ष की प्राप्ति करायेगा।

-प्रधान आर्य समाज, मॉडल टाऊन, यमुनानगर

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

महर्षि दयानन्द विनोदप्रिय भी थे

❒ खुशहाल चन्द्र आर्य

महर्षि दयानन्द इतने बड़े त्यागी, तपस्वी सन्यासी होकर केवल गम्भीर ही नहीं थे बल्कि सभी रसों का रसपान भी करते थे। वे असहाय और निर्बल को देखकर करूणा भाव से भर जाते थे। देश की या किसी व्यक्ति की दयनीय दशा देखकर रात भर रोते थे। किसी दुष्ट या पापी को दण्ड देने के लिए क्रोधित इतने अधिक होते थे, उनको देखकर दुष्ट डर के मारे भयभीत होकर उनके पैरों में पड़कर क्षमा मांगते थे। उनका कण्ठ भी बड़ा मधुर था। मन्त्रों को जब सस्वर बोलते थे या भजन गाते थे तो लोग झूमने लग जाते थे। इन सभी रसों का दिग्दर्शन उनके जीवन में पत्र-पत्र पर होता है। अन्य रसों के साथ-साथ उन्हें मनोरंजन करना भी प्रिय लगता था। यहा उनके जीवन की कुछ घटनाएं लिख रहे हैं जिनसे उनका मनोरंजन स्वभाव का दिग्दर्शन होता है। वे हंसी भांति है।

1. यह घटना सन् 1867 की चासी ग्राम की है। पंडित गंगा प्रसाद जी स्वामी जी के एक श्रद्धालु अनुयायी थे जिस प्रकार स्वामी जी जाटों को, राजपूतों को, वाणियों को यज्ञोपवीत देते थे, उनका अनुकरण करके गंगा प्रसाद जी भी उसी प्रकार गांव-गांव में विचरण करते हुए जनेऊ धारण कराते थे। उनके इस कार्य से स्वामी जी बहुत प्रसन्न थे। एक दिन, गंगा प्रसाद जी ने स्वामी चरणों में उपस्थित होकर निवेदन किया कि महाराज! मैंने बहुत बड़ी जन-संख्या को जनेऊ धारण कराये हैं स्वामी जी ने विनोदभाव से हंसते हुए कहा कि यज्ञोपवीत देते ही जाते हो या किसी का उतारते भी हो? उसने विनती की भगवन! कभी जनेऊ उतारा भी जाता है? स्वामी जी ने कहा हाँ, जो जन धर्म-कर्म हीन हो जाय उसके उपवीत (जनेऊ) उतार लेने चाहिए।

2. उसी गांव की घटना है कि पण्डित गंगा प्रसाद का गुरु प्राय: स्वामी जी के पास आया जाया करता था। एक दिन वह स्वामी जी की कुटिया पर अपने वस्त्र रख गंगा तीर पर स्नानार्थ जाने लगा। स्वामी जी विस्मयाकार में पूछा कि आपकी भुजा में क्या है? वह बोला महाराज, यह ''अनन्त'' है। स्वामी जी झट उसके पास चले गये और उंगलियों से नाथकर कहने लगे कि यह तो इतने अंगुल का है, अनन्त कहाँ है? उसने लज्जा के मारे वह अनन्त तुरन्त उतारकर गंगा में बहा दिया।

3. स्वामी जी चासी से अनूपशहर पधारे। वहां ठाकुर गिरवर सिंह चांदौख-निवासी स्वामी जी की सेवा में आये। उस समय उनके पास नर्मदा से मंगवाये हुए गोल पिण्ड भी थे। वे उनका प्रतिदिन पूजन किया करते थे। ठाकुर महाशय ने स्वामी जी से पूछा कि क्या शिव पूजा अच्छी है? स्वामी जी ने उत्तर दिया कि इससे तो चिट्टियों की पूजा करना अच्छा है, क्योंकि जो नैवेघ उस पर चढ़ाया जाता है उसे यह बटिया तो नहीं खा सकती परन्तु चिउंटियों पर चढ़ाओगे तो वे अवश्य खा लेवेंगी।

4. स्वामी जी महाराज पौष सुदी 6 सं. 1930 तदनुसार सन् 1873 को अलीगढ़ में आये और राजा जयकृष्णाजी के अतिथि बने। महाराज का शुभागमन सुनकर सहस्त्रों नगर निवासी तथा आस पास के गांव के लोग उपदेश सुनने आने लगे। सारे नगर में स्वामी जी के प्रचार का प्रभाव था। हिन्दू मुसलमान, ईसाई सभी सत्संग में आते थे। व्याख्यान के पश्चात् शंका-समाधान भी होता था। उसमें रात के दस बज जाया करते थे। स्वामी जी के इस अनथक-पन की सभी प्रशंसा करते थे। एक दिन एक पण्डित मन्दिर के चबूतरे के ऊँचे स्थान पर बैठकर स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने लगा। लोगों ने उसके ऊँचे स्थान पर बैठने को बुरा समझा। कई भद्र पुरुषों ने उसे समझाया कि सभ्य पुरुषों की तरह बैठकर वर्त्तालाप करो, परन्तु वह ऐसा हठीला था कि वहीं डटा रहा। स्वामी जी ने लोगों से कहा कि कोई हानि नहीं, पंडित जी वहीं बैठे रहें। केवल ऊँचे आसन से किसी को महत्व प्राप्त नहीं होता। यदि ऊँचा आसन बड़ाई का कारण से तो पंडित जी से भी ऊँचे वृक्ष पर वह कौआ बैठा है।

5. सन् 1879 में स्वामी जी कानपुर होते हुए दानपुर पहुंचे। वहां स्वामी जी के एक पुरुष ने प्रार्थना की ''महाराज' अभ्यास में मन लगाने का बहुत ही यत्न करता हूँ, परन्तु मन नहीं लगता। इसके संकल्प विकल्प शान्त ही नहीं होते।''

स्वामी जी ने व्यंग तथा विनोद भाव से कहा कि यदि मन नहीं टिकता तो भांग भवानी का एक लौटा और चढ़ा लिया करो।''

यह उत्तर सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह मन ही मन कहने लगा कि स्वामी जी को तो पता भी नहीं है कि मैं भांग पीता हूं। फिर यह कैसे जान गये? सच है सत्पुरुषों के सामर्थ्य की कोई सीमा नहीं होती। उनका ज्ञान अगम्य हुआ करता है। इसी प्रकार एक दिन एक अन्य महाशय ने भी निवेदन किया। भगवन् उपासना में चंचल चित्त को टिकाने के लिए किसी योग-क्रिया का उपदेश दीजिए।

स्वामी जी पहले वाले भाव से ही शिक्षा दी कि एक विवाह और कर लो, फिर चित्त आप ही स्थिर हो जायेगा। यह उत्तर सुनकर वह व्यक्ति अति लज्जित और विस्मित हुआ। लज्जा तो उसे इसलिए आई कि एक स्त्री के जीते जी उसने दूसरा विवाह कर लिया था और आश्चर्य इसलिए हुआ कि बिना बताये, महाराज को इसका ज्ञान हुआ तो कैसे हुआ।

यह घटना सन् 1872 की है। स्वामी जी सायं काल 8 बजे पटना से चलकर गाड़ी रात के बारह बजे जमालपुर जंक्शन पर पहुंची। उस समय मुंगेर को जाने वाली गाड़ी के छूटने में एक घण्टा शेष था। स्वामी जी पटना की गाड़ी से उतर कर वहीं जमालपुर स्टेशन के आंगन में टहलने लग गये। उस समय वहां एक अंग्रेज इंजीनियर पत्नी सहित खड़ा था। इस इंजीनियर की पत्नी ने कौपीन मात्र धारी एक परमहंस को अपने सामने घूमता देखकर बुरा माना। इंजीनियर महाशय ने तुरन्त जाकर स्टेशन मास्टर से कहा, ''यह कौन नंगा टहल रहा है? हमे इधर-उधर घूमने से बन्द कर दो।'' स्टेशन मास्टर ने महाराज को अति विनीत भाव से कहा, ''भगवान! दूसरी ओर चलकर कुर्सी पर आराम कीजिए। मुंगेर की गाड़ी के जाने में अभी बड़ी देर है।

स्वामी जी पहले ही सब कुछ समझ गये थे। इसलिए उन्होंने स्टेशन मास्टर से काह, जिस महाशय ने मुझे हटा देने के लिए आपको यहां भेजा है, उसे जाकर कह दीजिए कि हम उस युग के मनुष्य है, जिस युग में बाबा आदम और माता हव्वा, अदन उद्यान में, नग्न घूमने में किंचित भी लज्जा न करते थे। महाराज ने टहलना पहले की भांति ही जारी रखा। इंजीनियर ने स्टेशन मास्टर को पुन: बुलाकर अपना आदेश दोहराया। इस पर स्टेशन मास्टर ने कहा कि महाशय! यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है, जिसे मैं आंगन से निकाल दूं। यह तो हम और आप जैसों

को कुछ भी न समझने वाला एक स्वतन्त्र सन्यासी है। तब इंजीनियर ने स्वामी जी का श्री नाम पूछा। इस पर स्टेशन मास्टर ने कहा कि इनका नाम दयानन्द सरस्वती है। इंजीनियर महाशय यह कहता हुआ कि क्या ये प्रसिद्ध सुधारक दयानन्द सरस्वती है, तत्काल उठ खड़ा हुआ और स्वामी जी के समीप जाकर उसने विनीत भाव से नमस्कार किया और कहा, 'चिरकाल से मेरे चिन्त में आपके दर्शनों की अभिलाषा थी। यह मेरा भाग्योदय है कि यहां आपके दर्शन हो गये हैं।

इस लेख में स्वामी जी ने वैदिक संस्कृतिक को ध्यान में रखते हुए आदम और हव्वा को बढ़ा आदम और माता हव्वा कह कर सम्बोधित किया है। बाकी हर स्थान पर आपको आदम और हव्वा पढ़ने को मिलेगा। यह हमारी ही एक वैदिक संस्कृति है जो दूसरे मतों के महान् व्यक्तियों को भी सम्मानित शब्दों में सम्बोधित करना सिखाती है।

– 180, महात्मा गांधी रोड, कोलकत्ता–7, मो. 9830135794

टंकारा गौशाला में गौ–पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन–पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन–पोषण पर 5000/–रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

–: निवेदक :–

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप–प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

जीवन में प्राणायाम की उपयोगिता

❒ प्राध्या. जय प्रकाश आर्य

'प्राणायाम' शब्द 'प्राण' और 'आयाम' दो शब्दो का योग है। प्राण का अर्थ सांस, जीवन, शक्ति, ऊर्जा है तथा आयाम का अर्थ विस्तार, लम्बाई, नियम, विरोध व नियन्त्रण है। इस प्राणायाम का अर्थ हुआ प्राणों=सांसों पर नियन्त्रण या विस्तार। बिना प्राण=सांस के शरीर शव कहलाता है। प्राण के द्वारा ही शरीर में जीवनी शक्ति का संचार होता है।

प्राणायाम प्राचीन ऋषियों की मानव समाज के लिए एक बहुमूल्य देन है। यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। योग्य मार्गदर्शक=गुरु के निर्देशन में इसका अभ्यास करने से मनुष्य का सर्वागीण विकास होता है। इसे **श्रद्धा पूर्वक करने से व्यक्ति का स्थूल शरीर निरोग, सूक्ष्म शरीर निर्मल और कारण शरीर उज्जवल होता है।** इसका वर्णन महर्षि मनु ने मनु स्मृति में इस प्रकार किया है **''दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मला:। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात॥''** इसका अर्थ है कि जिस प्रकार धातुओं के मैल अग्नि में तपाने से नष्ट हो जाते है उसी प्रकार प्राणायाम से सभी इन्द्रियों के=ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मोन्द्रियों के सभी दोष नष्ट होकर प्राण नियन्त्रण में हो जाते हैं। इतना ही नहीं योग के आठ अंगो में प्राणायाम का महत्वपूर्ण स्थान है। योग ऋषि पतञ्जति ने योगदर्शन के साधनापाद के 42 सूत्र में ''ततः क्षीयते प्रकाशावरणम्'' के द्वारा बतलाया है कि प्राणायाम के नियमित अभ्यास से प्रकाशावरण क्षीण होने लगता है। इसका अभिप्राय यह है कि मन, बुद्धि, चित पर जो काम, क्रोध, लोभ, मोह रूप अज्ञान का आवरण होता है, वह प्राणायाम से दूर हो जाता है तथा मनुष्य में अच्छे संस्कारों का प्रादुर्भाव होना प्रारम्भ हो जाता है। युग पुरुष महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं-**'जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उतरोत्तर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश होता जाता है। जब तक मुक्ति न हो तब उसके आत्मा का ज्ञान बराबर बढ़ता जाता है।''** इसके साथ ही 'प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रियां भी स्वाधीन होते हैं। बल पुरुषार्थ बढ़कर बुद्धि तीव्र सूक्ष्म रूप हो जाती है, जो कठिन और सूक्ष्म विषय को शीघ्र ग्रहण करती है।'

प्राणायाम जैसे महत्वपूर्ण विषय पर वेदों में भी प्रकाश डाला है। अथर्व वेद में प्राण से मैत्री व प्राण साधना का सन्देश कई मन्त्रों से मिलता है। ऋग्वेद में इसकी विस्तार से चर्चा की गई है। इतना ही नहीं इस पर गीता, रामायण, उपनिषद के अतिरिक्त भारतीय वाङ्मय का बहुत बड़ा भाग इसकी महिमा का बखान कर रहा है। यहाँ तक के प्राण को पिता, माता, आचार्य भ्राता के अलंकारों से सुशोभित किया गया है। अतः इस आधार पर प्राणायाम की उपयोगिता बहुत बढ़ जाती है।

प्राणायाम से रक्त शुद्ध होने से शरीर के आन्तरिक अवयव शुद्ध हो जाते हैं जिससे तनाव व असंयम से छुटकारा मिल जाता है। इतना ही नहीं वात, पित, कफ की विशमता दूर हो जाती है। परिणाम स्वरूप मन पवित्र होकर संयमित हो जाता है। जिससे मानव के स्वभाव में भी बहुत बड़ा परिवर्तन आ जाता है। इससे उसके हृदय में करूणा, मुदिता, दय, परोपकार जैसे सात्विक विचार उदित होते हैं। सात्विक विचारों के कारण वह ईमानदार, राष्ट्रभक्त तथा प्रभुभक्त बन जाता है। इतना ही नहीं प्राणायाम को श्रद्धापूर्वक अभ्यास करने से व्यक्ति के चरित्र का भी विकास होता है। चरित्रवान व्यक्ति ही राष्ट्र व समाज को उन्नत कर सकता है।

- एम.ए. (हिन्दी, राज. शास्त्र) एम. एड. प्रधान आर्य समाज, जवाहर नगर, पलवल

ऐसे न करें भोजन

❒ प्रोफेसर अनूप कुमार गक्खड़, एम.डी. आयुर्वेद

प्रकृति विरुद्ध आहार वात, पित्त व कफ इन तीन दोषों को और रस रक्तादि धातुओं को स्वेद मूत्र आदि मलों एवं उपधातुओं को , त्रयोदश अग्नियों एवं स्रोतस् को दूषित करता है।

दही से मिश्रित अन्न शरीर की चर्बी बढ़ाने वाला, आलस्य देने वाला,उदर की अग्नि मन्द करने वाला, उष्ण,पित्त,क्लेद तथा कफ वर्धक घाव वाले रोगियों के लिए हानिकारक है। अत्यंत सूखा अन्न बल वर्ण को नष्ट करता है। अति उष्ण अन्न मद, दाह, प्यास उत्पन्न करता है। बल को मिटाता है, श्रम व रक्तपित्त को उत्पन्न करता है। तिनके, केश आदि से अपवित्र किया गया भोजन, दोबारा गर्म किया गया भोजन, अत्यधिक नमकीन तथा गर्म भोजन सर्वथा त्याग का देना चाहिए। नीच , दरिद्र , भूखे , पाषण्ड, स्त्रैण, रोगी, मुर्गे, सर्प और कुत्ते की दृष्टि भोजन में ठीक नहीं होती। अन्न में संक्रमित होने से अजीर्ण रोग उत्पन्न होता है। किसी वस्तु से माथा लपेट कर तथा जूता पहन कर भोजन करना उचित नही होता। इस प्रकार भोजन करना आसुरी प्रकृति का लक्षण है। बहुत अधिक चिकनायी वाला भोजन कफ की वृद्धि करता है। हृदय में भारीपन व आलस्य लाता है। इसके सेवन से उल्टी आने को मन करता है व भोजन में अरुचि पैदा होती है।

भोजन का निश्चित समय बीत जाने पर जो व्यक्ति कम या अधिक भोजन करता है उसका भोजन स्वयंमेव विषमय हो जाता है। भोजन करने के बाद तुरन्त भोजन करना ठीक नही होता है।

अत्यधिक भोजन करने से ग्लानि भावना पैदा होती है जबकि कम मात्रा में भोजन करने से शरीर की शक्ति कम हो जाती है। भोजन काल के आरम्भ में जल पीने से जठराग्नि धीरे धीरे कमजोर हो जाती है, शरीर के अंग प्रत्यंग दुर्बल हो जाते हैं। भोजन काल के मध्य में जल पीने से भूख बढ़ती है। आठ प्रकार से अन्न दूषित हो जाता है- रुद्र, चिपचपा, अपवित्र, काढ़ा बन जाने से, सुखाया जाने से जला हुया, बदसूरत, मनुष्य द्वारा नहीं उपजाया गया दुर्गन्धयुक्त भात नहीं ग्रहण करना चाहिए। क्योंकि यह सवर्था भारी और दूषित होता है। प्यासे व्यक्ति को पहले भोजन नहीं करना चाहिए तथा भूखे व्यक्ति को पहले जल नही पीना चाहिए। जो मनुष्य प्यासा रहता है वह गुल्म रोगी हो जाता है तथा भूखे रहने वाला व्यक्ति भगन्दर का रोगी हो जाता है।

रात्रि के समय थोड़ा जल पीना भी विष के समान होता है।

आम अर्थात कच्चा, जला हुया, मल को बांधने वाले द्रव्य अजीर्ण के कारण होते हैं। भोजन करने वाला व्यक्ति यदि निन्दा करने वाला तथा क्रोध करने वाला होता है तो वह भोजन निश्चित रूप से अपचन अन्न अजीर्ण होकर विष तुल्य हो जाता है। अपना हित चाहने वाले को अकेले भोजन नहीं करना चाहिए। दुष्कर्म से अर्जित कृपण का धन दुष्परिणाम देने वाला होता है। ऐसे धन के भोजन के करने से प्रत्यक्ष फल नही मिलता। इस प्रकार के धन से दरिद्र को भोजन देने से भी लाभ नही होता।

जिस स्थान पर भोजन बनाया जाए उस स्थान को शुद्ध न करके बनाया जाए तो भोजन से वांछित लाभ नहीं प्राप्त होता।

विभागाध्यक्ष,संहिता,संस्कृत एवं सिद्धान्त, ऋषिकुल राजकीय आयुर्वेदिक कालेज, हरिद्वार 249401 ,

आज देश को जरूरत है एक मजबूत रबर बैंड की

❒ रवीन्द्र साहनी

दैनिक परिवेश में हमारे आसपास अनेक चीजें बिखरी, हमें दिखाई देती है। ये सभी चीजें हमारी रोज़मर्रा की जिन्दगी से जुड़ी हुई है। ये सभी चीजें हमारे लिए उपयोगी हैं क्योंकि प्रत्येक चीज हमारी किसी न किसी आवश्यकता को पूरा करती है। इन असंख्य बिखरी वस्तुओं में एक बहुत साधारण सी चीज विशेष रूप से मेरा ध्यान आकर्षित करती है, जिसे जानकर शायद आप मेरी मुर्खता पर हँसेंगे। वह, बहुत ही मामूली नजर आने वाली वस्तु हैं 'रबर बैंड'। मैं अपने घर में रबर बैंड बहुत ही संभाल कर रखता हूँ। इस मामूली सी नाचीज पर ना तो किसी का ध्यान गया है और ना ही किसी ने रिसर्च करने की कोशिश की है। घर में छोटी बच्ची से लेकर बुजुर्ग महिला तक रोज इसका प्रयोग करती हैं। रबर बैंड ही महिला के असंख्य लम्बे बिखरे बालों को एक व्यवस्थित रूप देता है। अपने व्यवसाय में दिनभर व्यस्त रहने के बाद, जब आप घर आकर रात को आप अपनी आय की राशि को संभालते है तो विभिन्न मूल्यवर्ग के नोटों को व्यवस्थित रूप से जमाकर रबर बैंड से जकड़ देते हैं। एक मामूली सा रबर बैंड ही ढेर सारे बिखरे नोटों को व्यवस्थित व एकरूपता प्रदान करता है।

दुर्भाग्य

कैसा है दुर्भाग्य देश का
कि स्वाधीनता हमें
अधिक समय तक रास नहीं आती!
सैंकड़ों वर्षों की पराधीनता के कारण
आज के हालात देख कर
बखूबी समझ में आता है,
हर युग में इस बदनसीब देश में
कोई न कोई जयचन्द मीरजाफर
पैदा हो ही जाता है।
निजी स्वार्थ, सत्ता की लोलुपता में
मदांध होकर जगह-जगह
कुछ ऐसे तत्व सिर उठाते हैं
जो अपनी दूषित सोच और घृणित चालों से
समृद्धि और विकास की ओर अग्रसर राष्ट्र को
फिर पीछे की ओर धकेल ले जाते हैं।
भूल जाते हैं ऐसे लोग
कि यदि देश की संगठित सुदृढ़ नहीं होगा
तो वे भी सुरक्षित नहीं रहेंगे।

ओमप्रकाश बजाज

यहां, रबर बैंड का गुणगान मैं इसलिए नहीं कर रहा कि बाल व्यवस्थित करने का, बिखरों को एकजुट करने का, बिछुड़ों को मिलाने का। अपनी अपनी डफली से अलग-अलग राग निकालने वालों को इकट्ठा करके एक धुन निकालने का। जाति, धर्म, भाषा, प्रान्त आदि विभिन्नताओं को एक गुलदस्ते में सजाकर एक नया रूप देने का। तथाकथित जिहाद के नाम पर अपने ही घर को आग लगाने वालों को कानून की बेडियों में जकड़ने का। आज देश को ऐसे ही एक मजबूत रबर बैंड की जरूरत है जो देश की एकता को टूटने से बचा सके। इतिहास ऐसी अनेक घटनाओं से भरा पड़ा है, जहां विघटनकारी व विध्वंसक प्रवृत्तियों के बीच ऐसे वीर पुरुष हुए हैं जिन्होंने अपनी वीरता, साहस, बल, बुद्धि एवं कूटनीति से उन विघटनकारी शक्तियों को परास्त कर देश को पुन: एकता के बंधन में बांध दिया।

संयुक्त राज्य अमेरिका में राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा दास प्रथा को समाप्त करने पर देश के उत्तरी व दक्षिणी राज्यों के बीच गृह युद्ध छिड़ गया। अनेक वर्षों तक चले इस गृह युद्ध में हजारों लोग मारे गए। गृह युद्ध के बीच गेटिसबर्ग में उनके भाषण के ये शब्द **'जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन'** का कभी अन्त नहीं होगा, इतिहास की धरोहर बन गए। लिंकन ने एक मजबूत रबर बैंड बनकर देश के विघटन को बचाकर एक बंधन में बांधे रखा। अनेक स्वतन्त्र राज्यों में विभाजित कमजोर जर्मनी को बिस्मार्क ने अपनी कूटनीति से एक राष्ट्रीयता के मजबूत बंधन में बांध कर जर्मनी को एक शक्तिशाली राष्ट्र बना दिया। तुर्की में कमाल पाशा ने अपनी सूझ-बूझ व शक्ति के बल पर राष्ट्र को आधुनिक देशों की श्रेणी में खड़ा कर दिया। प्राचीनकाल से ही भारत एक भौगोलिक इकाई तो रहा है, लेकिन राजनीतिक दृष्टि से एक राष्ट्र के धागे में कभी नहीं बंधा। स्वतंत्रता के साथ ही अनेक स्वतंत्र देशी रियासतों में से, अनेक स्वतन्त्र राज्य का स्वप्न संजोए बैठी थी, तो अनेक अपना विलय पाकिस्तान में करने की ताक में थी। ऐसी विषम परिस्थिति में सरदार वल्लभभाई पटेल ने एक मजबूत रबर बैंड बनकर 562 स्वतन्त्र देशी रियासतों को भारत के मजबूत राष्ट्रीयता के धागे में पिरो दिया। आज अलगाववादी प्रवृतियां, देश के कोने-कोने में अपना सिर उठा रही है। पिछले कई दशकों से हिमाच्छादित कश्मीर जल रहा है। पृथकतावाद के बारूद से असम व पूर्वांचल दहक रहा है। धर्म के नाम पर देश को टुकड़ों में बांटने के लिए देश के हर कोने में विस्फोट कर दशहत फैलाई जा रही है। भाषा के नाम पर महाराष्ट्र में गैर मराठा लोगों को प्रताड़ित किया जा रहा है। स्वतन्त्रता के छ: दशक बाद भी आरक्षण की नई-नई मांगे उठ रही हैं।

अनिश्चितता और दशहत के तूफान में देश की नैया को बचाने के लिए एक कुशल, साहसी और राष्ट्रवादी खवैया की जरूरत है। एक ऐसे वीर पुरुष, नि:स्वार्थी, बलिदानी महापुरुष की जरूरत है जो विध्वंसकारी प्रवृतियों से देश की रक्षा कर सके और देश को एकता के मजबूत रबर बैंड में बांध सके। इसलिए एक मौका मोदी को देना चाहिए।

- 218, शोपिंग सैन्टर, कोटा, मो. 0744-2360296

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्–चुनौतियां एवं सुझाव

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

पूरे विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाने के क्रान्तदर्शी देव दयानन्द के स्वप्न को साकार करने का दायित्व दयानंदी परिवार के सदस्य कहने वाले आर्यो पर है। इस गुरुतर कार्य में हम कितने सफल हो पा रहे हैं इसके लिए हमारे समक्ष क्या चुनौतियाँ हैं तथा इन चुनौतियों से निबटने के लिए हम कितने प्रयास कर पाने में सक्षम हैं यह एक चिंतन करने का विषय है। जिस प्रकार किसी रोग के इलाज से पूर्व डाक्टर उसका ठीक प्रकार से आकलन करता है फिर उसके लिए आवश्यक दवा का प्रयोग करता है। आज **'कृण्वन्तो विश्वर्मायम्'** के लक्ष्य को प्राप्त करने के रास्ते में आने वाली चुनौतियों को समझ कर उनका सामना करने के लिए स्वयं को तैयार करना होगा। इस पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

1. क्रान्तदर्शी देव दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना एक आन्दोलन के रूप में की थी। एक ऐसा आन्दोलन जो समाज में व्याप्त सभी अन्धाविश्वासों, पाखंडों, कुरीतियों से मुक्ति दिलवाकर सबका समर्थन और विस्तार पाता था। उस समय नारी शिक्षा, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बालविवाह, जाति प्रथा कितनी सामाजिक बीमारियों से समाज को मुक्त करवाने का श्रेय आर्य समाज को जाता है।

परन्तु आज यह सभी बुराइयाँ नए-नए स्वरूपों में समाज में व्याप्त हैं। कन्याभ्रूण हत्या, नारी विमर्श के नाम पर नग्नता, बालविवाह, बंधुआ मजदूरी, भ्रष्टाचार आदि कितनी बीमारियां समाज में अपने भयावह स्वरूप में विद्यमान हैं। क्या आर्य समाज ने कभी आन्दोलन के रूप में अग्रणी भूमिका निभाते हुए इनके विरुद्ध संघर्ष का शंखनाद किया। हम शायद दूसरों द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलनों के पिछलग्गू बनकर अपनी पहचान खोते रहे।

2. महर्षि देव दयानन्द ने धार्मिक पाखंडों आडम्बरों और तथाकथित धर्म के ठेकेदारों का खुला पुरजोर विरोध पाखंड खंडन द्वारा किया। चाहे उसके लिए उन्हें कितनी बार विष दिया गया, अपमान सहने पड़े। परन्तु आज आर्य समाजों में आने वाले आर्य विद्वानों को खंडनात्मक बात ना कहने की सलाह इस डर से देते हैं कि लोग नाराज हो जायेंगे। आर्य सिद्धांतों के मंडन के साथ-साथ पाखंड खंडन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भोली-भाली जनता को भेड़ों की तरह मूंडकर स्वयं को ईश्वर वा ईश्वरीय अवतार घोषित कर चुके पाखंडी बाबों का पोल खोल अभियान आर्य समाज को चलाना होगा। लोगों को पाखंडी ढोंगी बाबाओं से बचाकर हम उनका विश्वास अर्जित करके उनमें आर्य सिद्धांतों का प्रचार कर सकते हैं। निर्मल बाबा, पाल दिनाकरन, रामपाल दास जैसे पाखंडियों के विरूद्ध आर्य समाज को आंदोलन करना चाहिये। गंदगी की सफाई का अपना विशेष महत्व है।

3. महर्षि दयानन्द ने जन्म आधारित जाति व्यवस्था का विरोध करके सामाजिक समरसता का संदेश दिया और आर्य समाज के ओ३म ध्वज तले सभी को एक सूत्र में बांध दिया। आज की राजनैतिक व्यवस्था में सत्ता प्राप्ति के लिए राजनेताओं ने 'फूट डालो राज करो' की अंग्रेजी नीति पर चलते हुए समाज को जातियों के कबीलों में बांट डाला है। राजनीति समाज को तोड़ती है परन्तु सच्चा वैदिक धर्म समाज को जोड़ता है। आर्य समाज को आर्य सिद्धांतों का प्रचार प्रसार करके जातियों के बंधन को तोड़ना होगा और सभी को दयानंदी आर्य परिवार के सूत्र में पिरोना होगा।

4. समाज में अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए तथाकथित अगड़ी जातियों के दबंग दलित वर्ग पर अत्याचार करके उन्हें दबाकर रखते हैं। वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था में इस कुप्रथा को स्वीकार्यता मिली हुई है। जन्म आधारित जाति का विरोध करके दलितों शोषितों पर हो रहे अत्याचारों का विरोध आर्य समाज को करना होगा। जाति ना पूछो साध की जातिगत भावना से ऊपर उठकर विद्वानों का सम्मान करना होगा। स्वामी श्रद्धानन्द की भांति अछूतोद्धार का कार्य हाथ में लेकर सामाजिक समरसता को स्थापित करना होगा।

5. आर्य समाज को भवन में हवन, के इर्द-गिर्द सिमटते देख अक्सर भविष्य की चिंता में डर लगता है। यज्ञ की व्यापक परिभाषा को समझकर यज्ञीय अर्थात परोपकार के कार्य करते हुए अपना जीवन यज्ञमय बनाकर आर्यो की अपने व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण पैदा करना होगा ताकि लोग आर्य सिद्धांतों की ओर आकर्षित हों। पहले स्वयं आर्य बनें फिर दूसरों को आर्य बनने की प्रेरणा दें।

6. आर्य समाज के भवनों को हड़पने की बदनियति से हर हाल में पद पर चिपके मठाधीशों से आर्य समाजों को मुक्त करवाना होगा ताकि नए युवा लोगों को काम करने का मौका मिल सके और अधिक से अधिक लोग आर्य समाज से जुड़ सकें। अनेकों आर्य समाजों में वर्षो से प्रधान पद पर कब्जा किए बैठे ऐसे लोग अपनी जोड़-तोड़ की राजनीति से आर्य प्रचार प्रसार की हानि कर रहे हैं।

7.आर्य समाजों के भवन बस सुबह के हवन के बाद बंद हो जाते हैं। इनका अधिकतम उपयोग वेद प्रचार एवं अन्य सामाजिक कार्यो के लिए किया जाना चाहिए। इनमें योग कक्षायें, हवन, आर्य कुमार सभायें, आर्य युवा संगठनों की शाखायें, धर्मार्थ औषधालय, सिलाई प्रशिक्षण इत्यादि कार्य निरन्तर नियमित रूप से चलाए जा सकते हैं। आर्य समाज सै. 19 फरीदाबाद भवन का बहुआयामी उपयोग सभी के लिए अनुकरणीय है।

8. आर्य संगठनों में फूट का राज रोग दीमक की भांति लग चुका है जिसके कारण समाज की दशा निरंतर खोखली होती जा रही है। फूट के इस राज रोग का ईलाज आपातकालीन ढंग से करना होगा और इसके लिए शीर्ष आर्य सन्यासियों, विद्वानों को पहल करनी होगी।

9. आर्य कर्मकांडों में पुरोहितों को एकरूपता लाने की नितान्त आवश्यकता है इसके लिए धर्मार्य सभा को पहल करके सभी विद्वानों को एक निश्चित निर्णय पर पहुंचने के लिए प्रेरित करना पड़ेगा। सभी कर्मकांडों में आर्य पुरोहितों द्वारा संस्कारों में एकरूपता से आम जनता का विश्वास आर्ष पद्धति पर बढ़ेगा।

10. नि:स्वार्थ भाव से आर्य सिद्धांतों का प्रचार प्रसार करने वाली दयानंद के दीवानों की फौज तैयार करनी होगी। इसके लिए पारिवारिक दायित्वों से निवृत हो चुके वानप्रस्थियों, विरक्त हो चुके सन्यासियों के साथ-साथ समर्पित युवाओं को आगे आना होगा। इसके लिए आर्य संगठनों को एकजुट होकर प्रयास करना पड़ेगा।

11. आर्य विद्वानों, सन्यासियों, प्रचारकों, युवा संगठनों के अधिकारियों का पूरा मान सम्मान करना हम सभी आर्य जनों का दायित्व बनता है। बड़े बड़े भवन और हवन से आर्य जनता से एकत्रित धन को केवल बैंकों

में रखकर उसके सूद से खर्च चलाना और फिर उन भवनों तथा एकत्रित कोष का झगड़े का कारण बनने से कहीं अच्छा है इस धन का सदुपयोग आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए किया जाये। आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद पंजी. इसका अच्छा उदाहरण है जिसने आर्य प्रचार प्रसार के कार्यक्रमों के नए कीर्तिमान स्थापित किए।

12. जहां एक ओर आर्य विद्वानों का सम्मान सत्कार करना आर्य जनों का कर्तव्य है वहीं आर्य पुरोहितों को भी दक्षिणानन्द बनने की प्रवृति से बचना होगा। इसके लिए आर्य समाजों व संगठनों का दायित्व बनता है कि वह अपने विद्वानों को धन की कमी के कारण रूकने न दें। आर्य विद्वान दीपक में जल रही बाती के समान हैं हमें उसमें तेल की कमी से जलकर बाती को नष्ट होने से बचाना होगा। आर्य विद्वानों को परिवार के दायित्वों से निश्चिंत होकर प्रचार प्रसार के कार्य को करने का मौका देना होगा।

13. किसी भी समाज में विद्वान प्रचारकों का अभाव उसके भविष्य के लिए घातक होता है। विद्वानों, भजनोपदेशकों के निर्माण के लिए अधिक से अधिक उपदेशक विद्यालय, गुरूकुलों आदि का संचालन अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए डी.ए.वी. द्वारा संचालित दयानन्द ब्राह्म विद्यालय पूर्व में अच्छे आर्य विद्वानों की उद्‌गम स्थली रहा है। आर्य समाज सेवा सदन द्वारा निर्माणधीन उपदेशक विद्यालय की योजना भी एक अच्छी योजना है। अन्य धर्मों की पूरी जानकारी भी अपने आर्य सिद्धांतों के मंडन के लिए अत्यंत आवश्यक है। शास्त्रार्थ के लिए विश्व प्रसिद्ध आर्य समाज में वर्तमान समय में यह कमी काफी अखरती है। संस्कृत के साथ-साथ अरबी फारसी उर्दू अंग्रेजी पर समान अधिकार रखने वाले विद्वानों की सख्त आवश्यकता है। इसके लिए डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों को आगे आना होगा।

14. युवाओं को आर्य बनाने के उद्‌देश्य से सभी युवा आर्य संगठनों को आपसी मतभेद समाप्त कर एक कार्य योजना बनानी होगी। केवल गर्मियों की छुट्टियों तक सीमित हो चुके आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविरों को वर्ष भर चलाना नए-नए जुड़े युवा साथियों को लगातार प्रोत्साहित करना और एक युवा शक्ति का निर्माण करना आज समय की आवश्यकता है। इसके लिए युवा संगठनों को धन की कमी आड़े ना आये इस बात को आर्य दानवीरों, भामाशाहों को सुनिश्चित करना होगा।

15. जहां एक ओर युवाओं को प्रोत्साहित करके सहयोग देना आर्य नेताओं के लिए आवश्यक है वहीं आर्य नेताओं का सम्मान करना युवाओं का दायित्व है। युवा शक्ति उस पहाड़ी नदी की भांति ऊर्जा समेटे हुए है जिसकी ऊर्जा के प्रयोग के लिए अनुभव के बांध की आवश्यकता है। यदि युवा शक्ति को ठीक ढंग से संचय करके प्रयोग करें तो विकास में सहायक होगी अन्यथा यह प्रलयंकारी बाढ़ लाकर विनाशकारी भी सिद्ध हो सकती है।

16. सरकारी शिक्षा तन्त्र के उपरांत देश में सबसे बड़े शिक्षातंत्र के रूप में स्थापित हो चुके डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं को भी बचपन में ही बच्चों में आर्य सिद्धांतों के संस्कार डालने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को बड़ी ईमानदारी के साथ निभाना होगा। इसके लिए आर्य युवा समाज को सुदृढ़ करना डी.ए.वी. के प्राचार्यों, शिक्षकों को आर्य सिद्धांतों की पूरी जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। डी.ए.वी. के कितने विद्वान प्राचार्यों ने अपने समय में त्यागपूर्ण ढंग से आर्य प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में तो पूनम सूरी जी के नेतृत्व में डी.ए.वी. आंदोलन से आर्य समाज की अपेक्षायें बहुत बढ़ गई हैं।

17. बच्चे कच्ची मिट्‌टी के समान होते हैं बचपन में सीखी बातें पूरे जीवन साथ रहती हैं। इसलिए प्रत्येक आर्य समाज एवं आर्य शिक्षण संस्थान में आर्य कुमार सभा का संचालन अत्यंत आवश्यक है। फरीदाबाद में आर्य समाजों में कुमार सभायें सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं जो कि अन्य समाजों के लिए अनुकरणीय हैं।

18. महर्षि दयानन्द सरस्वती ने परोपकार को आर्य समाज का मुख्य उद्‌देश्य बतलाया है। आदिवासी क्षेत्रों, गरीब बस्तियों आदि में सेवा प्रकल्प खोलना जिसमें धर्मार्थ औषधालय, सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र आदि अन्य स्वरोजगार के साधन देकर हम उन गरीब बंचितों को अपने साथ जोड़ सकते हैं। सामूहिक विवाह आयोजन, रक्तदान शिविरों, नेत्रदान अभियान जैसे सामाजिक कार्यों का भी आर्य समाज के प्रचार प्रसार में अच्छा प्रभाव पड़ता है।

502 जी एच 27, सैक्टर 20 पंचकूला, मो. 09467608686

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। इस वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया हैं कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। **प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं।** इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाएगी और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाएगा। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि घर से जुड़ सकते हैं। इस वर्ष 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है। **सहयोग राशि के साथ अपना नाम, पूरा पता, मोबाइल नम्बर, ई-मेल, व्यवसाय एवम् किस आर्य समाज से संबंधित हैं कि जानकारी अवश्य भेजें। साथ ही आप ऋषि जन्मभूमि को किस प्रकार और सहयोग कर सकते हैं संक्षिप्त में लिखें। टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**	**योगेश मुंजाल (संयोजक)**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	(उप-प्रधाना)	(मन्त्री)	(सहयोगी सदस्य अभियान समिति)

उदात्त जीवन का आधार : संस्कार

❒ **डॉ. धर्मवीर सेठी**

संस्कृत: देवभाषा, संस्कार:, देवभाषा ज्ञान का प्रतिफल:, संस्कृति: संस्कार का व्यावहारिक पक्ष और सांस्कृतिक, उस संस्कृति का मंचन। वस्तुत: ये सभी शब्द और भाव परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। यह वाक्य प्राय: सुनने को मिलता है कि 'अमुक बालक के व्यवहार को देख कर पता चलता है कि उसके माता-पिता ने उसे कितने अच्छे संस्कार दिये हैं। बात सही है क्योंकि **'माता निर्माता भवति'**-माँ ही तो श्रेष्ठ बालक का निर्माण करने वाली होती है। शिवाजी का प्रसंग आए तो जीजाबाई को अवश्य याद किया जाएगा। अभिमन्यु की घटना के साथ उसकी माँ सुभद्रा का स्मरण अनायास हो जाएगा। राष्ट्रीय अस्मिता को बचाने के लिए न्यौछावर होने वाले वीर, धार्मिक क्षेत्र के धर्मगुरु, समाज कल्याण के लिए अग्रणी एवं अन्य युग-पुरुष जो भी हों, उनके पीछे किसी न किसी रूप में मातृ-शक्ति की प्रेरणा रही है। शायद इसलिए वेदोक्त सोलह संस्कारों में प्रथम तीन संस्कार तो माँ की कोख से ही सम्बन्धित है, वहीं से उदात्त स्वभाव वाली सन्तान का निर्माण आरम्भ होता है।

यही आचरण की, संस्कार की पक्की नींव हैं। भवन (मानव देह) अपने आप आलीशान बनेगा और उसे 'सुसंस्कृत' की संज्ञा से अलंकृत भी किया जाएगा। महाभारत में मानव जन्म के महत्व को इन शब्दों में आंका गया है-

न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्

अर्थात् मनुष्य से बढ़कर और कोई श्रेष्ठ है ही नहीं। महाकवि तुलसीदास ने तो यहाँ तक कह दिया-

बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थहिं गावा॥

मनुष्य जन्म अनेक पुण्यों का फल है। परा-शक्ति के बाद इन्सान ही जगत् का संचालक है।

इस दुर्लभ, अद्विितीय शरीर का निर्माण करने हेतु माँ का दायित्व और भी बढ़ जाता है। अस्तु! उन सोलह संस्कारों में प्रथम तीन अर्थात् **गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन** तो बालक गर्भावस्था में रहने पर ही सम्पन्न किये जाते हैं। माँ की सोच, उसके आचरण, खान-पान सबका प्रभाव कोख में पलने वाले बच्चे पर पड़ता है।

फिर होता है जन्म: **जातकर्त संस्कार।** यदि शास्त्रोक्त विधि से सभी संस्कार निष्पन्न हो तो बालक पर उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। परन्तु खेद इस बात का है कि संस्कार के मर्म को समझने का प्रयत्न ही नहीं किया जाता है। पाँचवाँ संस्कार है **नामकरण।** कितना सुन्दर विधान है इस संस्कार को मनाने का। पिता बालक की नासिका-द्वार से बाहर निकलती हुई वायु (श्वास) का स्पर्श करके पूछता है-

'कोऽसि, कतमोऽसि, कस्यासि, को नामासि'

अर्थात् तुम कौन हो, कहाँ से आए हो, किसके हो और तुम्हारा नाम क्या है? फिर उसे एक विशिष्ट नाम दिया जाता है। शास्त्र कहता है कि नाम सार्थक होना चाहिए। नाम के अनुकूल यदि उसका आचरण भी हो, तो 'सोने पे सुहागा'।

सूची में छटा संस्कार है **'निष्क्रमण'** अर्थात् बालक को घर के बाहर जहाँ वायु, स्थान शुद्ध हो, वहाँ भ्रमण कराना, घुमाना। वस्तुत: इससे होता है सूर्य की प्रथम रश्मियों से बालक का स्पर्श। **'अन्नप्राशन'** सातवां संस्कार है। जो बालक को अन्न पचाने की शक्ति के लिए किया जाता है।

' चूड़ाकर्म' अर्थात् प्रचलित **'मुण्डन'** संस्कार तदनन्तर आठवाँ संस्कार है। उत्तरायण काल, शुक्ल पक्ष में जिस दिन आनन्द-मंगल हो, उस दिन प्राय: संस्कार को करने का विधान है। बालक के लिए 'कर्णवेध' संस्कार में कान और नासिका छिदवाने का विधान है जिसे जन्म से तीसरे या पाँचवे वर्ष में सम्पन्न कराया जाता है। **'ओं भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा'** कितना सटीक मन्त्र है।

और दसवाँ संस्कार है **'उपनयन'** जिसे **'यज्ञोपवीत'** संस्कार भी कहा जाता है। वस्तुत: इसके तीन धागे मातृ ऋण, पितृ ऋण और आचार्य ऋण की स्मृति को सदा बनाए रखते हैं 'उप' अर्थात् समीप और 'नयन' अर्थात् होना या ले जाना। आचार्य के समीप अवस्थित रहना। इसलिए सम्भवत: इसके बाद का संस्कार है **'वेदारम्भ'**। वेद का अर्थात् ज्ञानोपार्जन का श्रीगणेश। ध्यान रहे ज्ञान की कोई सीमा नहीं। **'समावर्त्तन'** संस्कार में ब्रह्मचर्यव्रत, साङ्गोपांग वेदविद्या, उत्तम शिक्षा और पदार्थ-विज्ञान को पूर्ण रीति से प्राप्त कर गृहाश्रम को ग्रहण करने के लिए विद्यालय को छोड़ घर की ओर आना होता है।

तेरहवाँ संस्कार है 'विवाह संस्कार'। इसे 'पाणि-ग्रहण' भी कहा जाता है। इस संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि 'संस्कारित' सन्तानें यहीं से पैदा होती हैं। ब्राह्मण और संन्यासी इन्हीं गृहस्थियों के द्वार पर ही आते हैं 'भिक्षां देहि' इन्हीं के द्वार पर बोला जाता है। वस्तुत: गृहस्थाश्रम वालों का समाज के प्रति विशिष्ट दायित्व बन जाता है। पति-पत्नी का परस्पर समर्पण इस आश्रम को और सुदृढ़ बनाता है। 'Husband' हस्तबन्ध का ही पर्याय है।

फिर बारी आती है **'वानप्रस्थ'** संस्कार की। इसे तीसरा आश्रम भी कहा जाता है। ब्रह्मचर्य और गृहस्थ के बाद। विधान यह है कि जब पुत्र का भी पुत्र हो जावे अर्थात् जब गृहस्थी पौत्र वाला बन जाए तो उसे वन की ओर चलने की तैयारी करनी चाहिए। शास्त्र के अनुसार:

ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेद्, गृही भूत्वा वनी भवेत्।
वनी भूत्वा प्रव्रजेत्॥ -शतपथ ब्राह्मण।
व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ (यजु: 19/30)

50 से 75 वर्ष की आयु का काल वानप्रस्थ कहा जाता है। -**'जीवेम शरद: शतम्'** के अनुसार चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास-25, 25 वर्ष की अवधि के निर्धारित किये गये हैं। जब गृहस्थ वानप्रस्थ होने की इच्छा करे तब अग्नि-होत्र को सामग्री सहित लेकर ग्राम से निकल जंगल में जितेन्द्रिय होकर निवास करे-

अग्निहोत्र समादाय गृह्यं चाग्निपरिच्छदम्।
ग्रामादरण्यं नि:सृत्य निवसेन्नियतेन्द्रिय:॥ (मनु. अ. 6)

क्या ही अच्छा हो कि परिवार में रहते हुए भी मुखिया वानप्रस्थ का जीवन व्यतीत करे।

पन्द्रहवाँ संस्कार है 'संन्यास' (संन्यास आश्रम) जिसमें संन्यासी के महत्वपूर्ण कर्त्तव्य की इस प्रकार विवेचना की गई है:

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम॥

यजु. 40/16

हे परमात्मदेव! मुझे सुपथ पर ले चलो। मैं बार-बार इसी की याचना करता हूँ।

और सोलहवीं सीढ़ी है **'भस्मान्तं शरीरम्'** (यजु: 40/15) अर्थात् **'अन्त्येष्टि'**। इन सोलह संस्कारों की संक्षिप्त चर्चा के उपरान्त वानप्रस्थ संस्कार (आश्रम) पर थोड़ा और विचार करने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार व्यक्ति जब आयु में बड़ा होने लगता है तो उसे प्रौढ़ की संज्ञा दी जाती है। अंग्रेजी में इसका पर्याय है (Matured)। सरकार की ओर से आयु की दृष्टि से वरिष्ठ नागरिक (Senior Citizen) को कुछ सुविधाएँ अवश्य दी जाती हैं परन्तु क्या आयु में बड़ा होने से उसमें बड़प्पन (Maturity) आ जाता है। Seniority और Maturity दो अलग-अलग अवस्थाएँ हैं। जो आयु में वरिष्ठ हो उसमें बड़प्पन भी हो यह आवश्यक नहीं और इसी प्रकार बड़प्पन के गुण को धारण करने वाला आयु में भी बड़ा हो, यह अनिवार्य नहीं। फ़ारसी में एक कहावत है:

बुजुर्गी ब अकल अस्त, न ब साल।
तवानगी ब उमर अस्त, न ब माल॥

Maturity is the outcome of intelligence and not years,
Seniority is because of age, not riches.

बड़प्पन में ही जीवन का सुख और आनन्द है।

प्रौढ़ संस्कार की बात करें तो उस व्यक्ति में Matured Person जैसा व्यवहार दिखना चाहिए न कि Seniority का। प्रौढ़ तो मार्ग दर्शक होता है, अपने अनुभवों के आधार पर वह समाज के हितार्थ कुछ कर गुजरने की चाह लिए रहता है। यदि उसे समाज और परिवार का सिरमौर कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। 'स्व' का त्याग और 'पर' की ओर बढ़ना ही प्रौढ़ता है। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना को अपनाने से निराशा नहीं होगी।

संस्कृत में एक कहावत है-

न सा सभा यत्र सन्ति न वृद्धाः।
वृद्धाः न ते यो न वदन्ति धर्मम्॥
नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति,
न तत् सत्यं यच्छलेनाभ्युपेतम्॥

अस्तु! प्रौढ़ व्यक्ति को सत्संग, स्वाध्याय, सेवा, परोपकार, दान आदि से अपने जीवन को सुखी, शान्त और सन्तुलित बनाना चाहिए इसी से जीवन में समरसता भी आएगी। निराशा दूर होगी और आत्मिक शक्ति बढ़ेगी। प्रौढ़ व्यक्ति का यही कर्तव्य-पथ है:

संसार दु:ख दलनेन सुभूषिता ये
धन्या नरा विहित कर्म परोपकाराः।

इसलिए आइए। हम वरिष्ठ (Senior) न बनकर प्रौढ़ (Matured) बनें। नर सेवा हमारी वरिष्ठता को प्रौढ़ता में परिवर्तित कर यह सीख देती है कि सेवा मात्र उपकार नहीं अपितु समाज के प्रति आभार व्यक्त करने का एक माध्यम है।

किसी शायर ने ठीक ही कहा है-

ये शामे जिन्दगी इसे हंस के गुज़ारिए।
रस्ता है बड़ा कठिन, मगर हिम्मत न हारिए।

- सुशान्त लोक-1, गुरुग्राम-122009 (हरियाणा)

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर ''डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार'' उस विद्यार्थी को दिया जायेगा जिसे योगदर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने गुरुकुल के आचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के आचार्य को शीघ्र भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को पांच हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

सम्पर्क सूत्र- श्री आचार्य रामदेव
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा,
राजकोट-363650, गुजरात। दूरभाष न. 02822-287756

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

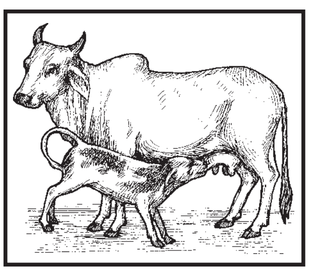

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,** के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

सावधान

પં. રમેશ ચન્દ્ર મહેતા 'ટંકારામિત્ર'
Email:- pt.rammehta@gmail.com

દેશની વિદેશની મોટી મોટી કંપનીઓએ દેશમાં પગ પેસારો કરીને આપણા સ્વાસ્થ્ય અને સ્થાનીય ધંધા રોજગાર સાથે કેટલી મોટી રમત આદરી છે તે તરફ ધ્યાન ખેંચવા માંગુ છું.

૧. ટી. વી. ચેનલોમાં નેસ્લે કંપની પોતાની ચોકલેટ કીટકેટનો પ્રચાર કરી રહી છે. બાળકોને ખાસ લક્ષ્યમાં લેવામાં આવ્યા છે. ગાયની ચરબીને કારણે ૧૮૫૭માં કંપની સરકાર સામે બળવો થયો હતો. હવે આપણે ગાયના વાછરડાના આંતરડાનો રસ ભેળવેલી ચોકલેટો જાતે ખાઈએ છીએ અને હોંશે હોંશે આપણા બાળકોને ખવડાવીએ છીએ. ક્યાં ગયો આપણો ધર્મ?

૨. આપણી બહેન-દિકરીઓની સુંદર રૂપાળા દેખાવાની ઘેલછાનો લાભ લઈ મોટા પાયે ફેર એન્ડ લવલી ક્રિમનો પ્રચાર કરવામાં આવે છે. આ ક્રિમમાં સુવરના માંસની ચરબી ભેળવવામાં આવે છે. આ વાતનો સ્વીકાર કંપનીએ જાતે મદ્રાસની હાઈકોર્ટમાં કર્યો છે.

૩. ટી. વી. પર બાળકોને લક્ષ્યમાં લઈને એમના દાંતોની સુરક્ષા માટે કોલગેટની જાહેરાત કરવામાં આવી રહી છે. એમાં એક ડૉક્ટર બાળકોને દાંતની સુરક્ષા માટે સવાર-સાંજ બંને સમય કોલગેટથી બ્રશ કરવાની સલાહ આપતો બતાવવામાં આવે છે.

૪. અમેરિકા કે જ્યાં આ કંપનીના મૂળિયા છે ત્યાં, ટૂથપેસ્ટ પર ચેતવણી લખવામાં આવે છે કે "૬ વર્ષ કરતા નાના બાળકોથી આ ટૂથપેસ્ટ દૂર રાખો. જો કોઈ સંજોગોમાં નાનું બાળક મહોંમાં આ ટૂથપેસ્ટ લઈ લે તો બાળકને નજીકના ઝેર નિયંત્રણ કેન્દ્રમાં લઈ જવું. કારણ કે બાળકો પર કેન્સરનો હુમલો થઈ શકે એવા રસાયણ એમાં છે." જો તમે પુખ્ત વયના હો તો ટૂથબ્રશ પર વટાણાના દાણા કરતા વધારે પેસ્ટ ન લેશો.

૫. શરદી અને ઉધરસમાં રાહત આપનારી દવા વિક્સનો મિડીયામાં ખૂબ પ્રચાર થઈ રહ્યો છે, જ્યારે કે યૂરોપના અનેક દેશોમાં એના પર પ્રતિબંધ મૂકવામાં આવ્યો છે.

૬. લાઈફ બોય હૈ જહાં તન્દુરસ્તી હૈ વહાંનું જિંગલ આપણા માથા પર મારવામાં આવે છે. આ લાઈફબોય સાબુ ન તો બાથ સોપ છે કે ન તો ટોયલેટ સોપ. આ તો યૂરોપના અનેક દેશોમાં જાનવરોને નવડાવવા માટે વપરાતો સાધારણ કાર્બોલિક સાબુ છે.

૭. કોકાકોલા અને પેપ્સીની હકીકત તો આના કરતા પણ ભયંકર છે. એ સાબિત થઈ ચુક્યું છે કે એમાં જુદા જુદા પ્રકારના ૨૧ જાતના ઝેર છે. ભારતની સંસદની કેન્ટીન માં તો આ પીણાઓ પર પ્રતિબંધ છે.

૮. એનાથી પણ મોટી વાત જાણી લો કે પ્રસિદ્ધ ફિલ્મ અભિનેતા અમિતાભ બચ્ચનના આંતરડાનું ઑપરેશન કરીને આંતરડું કાપી નાખવામાં આવ્યું છે. ડૉક્ટરોનું કહેવું હતું કે કોક અને પેપ્સી વધારે પડતા પીવાથી આ તકલીફ થઈ છે. આ ઑપરેશન પછી અમિતાભ બચ્ચને ક્યારેય કોક અને પેપ્સી માટે જાહેરાતનું કામ નથી કર્યું.

૯. બાળકોની તંદુસ્તી માટે જુદા જુદા જેવા કે બૂસ્ટ, કોમ્પ્લાન, હોર્લીક, માલ્ટોવા અને પ્રોટિનેક્સ હેલ્થટોનિકની ખૂબ જાહેરાતો જોવા મળે છે. દિલ્હીની પ્રસિદ્ધ પ્રયોગશાળામાં એનું પરીક્ષણ કરતા જાણવા મળ્યું કે આ બધામાં મગફળીનો ખોળ મોટી માત્રામાં ભેળવવામાં આવ્યો છે.

જો આપણી ટી. વી. ચેનલો ખરેખર પ્રમાણિક હોય તો આ બધા તથ્યો સાધારણ પ્રજા સામે રજુ કરે. પણ તેઓ આમ નહીં કરે. કારણ કે એમની આવકનો મુખ્ય સ્રોત આ બધી વિદેશી કંપનીઓ તરફથી મળતી જાહેરાતો જ છે.

ઋષિ દયાનન્દની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં સદાયના માટે અંકિત કરાવવાની સુવર્ણ તક.

ટંકારામાં નિમ્ન ચાર યોજનાઓ બનાવવામાં આવી છે – ૧ ગૌ –સેવા નિધિ, ૨ ભોજન સેવા નિધિ, ૩ યજ્ઞ સેવા નિધિ અને ૪ ઔષધ સેવા નિધિ

સર્વ વિદિત છે કે ટંકારામાં ઉપદેશક વિદ્યાલયના વિદ્યાર્થિઓના શિક્ષણ, આવાસ અને ભોજન સર્વથા નિ:શુલ્ક છે. ગૌશાળાનું દૂધ પણ વિદ્યાર્થિઓને જ આપવામાં આવે છે. ટંકારામાં ઋષિભક્તો ઉપરાન્ત બીજા યાત્રિકો પણ આવતા હોય છે. તેમના આવાસ-ભોજનની વ્યવસ્થા પણ સંસ્થા નિ:શુલ્ક કરે છે. સવાર-સાંજ બંને સમય નિયમિત યજ્ઞ થાય છે. ઔષધાલય પણ ચાલે છે. આ પ્રવૃત્તિઓના સહયોગી થવા માટે દાતાઓને આમન્ત્રણ છે. પ્રત્યેક પ્રકલ્પ માટે અગિયાર હજાર રૂપિયાનું દાન સ્વીકારવામાં આવે છે. દાનની રકમ ફિક્સ ડિપોઝીટમાં મુકવામાં આવશે. દાતા કહેશે તે નિધિના દિવસે તે પ્રકલ્પમાં તેમના તરફથી સેવા થશે. તે દિવસે બોર્ડ પર દાનદાતાનું નામ પણ મુકવામાં આવશે. આશા છે આવી સ્વરાણીમ તક ઉઠાવવાનો અમુલ્ય અવસર ઋષિભક્તો નહીં ચુકે.

સમ્પર્ક કરો :- શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ, દ્વારા, આર્યસમાજ મન્દિર માર્ગ, નવી દિલ્હી ૧૧૦૦૦૧

समाचार दर्पण

आर्य कन्या गुरुकुल लुधियाना
गुरु पूर्णिमा दिवस आयोजित

ब्रह्मचारणियों को आशीर्वाद देते कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल। इसी अवसर पर भजन प्रस्तुत करती गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियाँ। श्रीमती विजय लक्ष्मी जी का स्वागत करती श्रीमती मेहता, श्रीमती कालड़ा एवं श्रीमती खन्ना जी।

22 जुलाई 2013 को आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर लुधियाना में गुरु पूर्णिमा उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अतुल जी मेहता ने की। मुख्यातिथि के रूप में श्रीमती विजय लक्ष्मी जी पुरी (डायरेक्टर दृष्टि स्कूल, नारंगवाल) पधारी। गायत्री मन्त्र एवं ईश-स्तुति के प्रथम मन्त्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया।

कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल की उपस्थिति में गणमान्य आर्य महानुभावों ने अध्यक्ष जी एवं मुख्य अतिथि जी का पुष्प मालाओं से तथा ब्र. ने गुलदस्ते भेंट कर स्वागत किया। गुरुकुल के मैनेजर श्री मंगत राम जी मेहता ने अध्यक्ष जी एवं मुख्यातिथि जी का परिचय दिया। गुरु पूर्णिमा की बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि गुरु एक व्यक्ति नहीं, वह तो एक चेतना है, जो अनुशासन व व्यवस्था का निर्माण करता है। वह अपने ज्ञान एवं तपस्या से उत्तम नागरिकों का निर्माण करके समाज को नीरोग समाज बनाता है।

मंच-संचालन नवमी कक्षा की ब्र. निधि ने किया। ब्रह्मचारिणियों ने समस्त अध्यापिकाओं का पुष्प मालाओं से स्वागत किया। कुलपति जी ने अध्यापिकाओं को भेंट स्वरूप पुस्तकें देकर सम्मानित किया। ब्र. ने मन्त्र, भजन, भाषण, गीत आदि कार्यक्रम प्रस्तुत करके तथा अपनी अनुशासन व्यवस्था से सभा को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। आचार्या नवदीप जी ने गुरु एवं शिष्य के सम्बन्ध पर विचार व्यक्त किए। गुरुकुल के मैनेजर श्री मंगत राम जी मेहता ने दवसीं कक्षा की बोर्ड की परीक्षा का परिणाम बताया तथा कहा कि यह गुरुकुल आधुनिकता व प्राचीनता का समन्वय है।

मुख्य अतिथि जी ने कहा कि गुरु वह होता है जो अपने ज्ञान, अनुशासन व व्यवहार से अच्छी सीख देता है और समाज में एक अमिट छाप छोड़ता है। ब्र. की ओर से प्रधानाचार्य श्रीमती सतीश जी तलवार ने मुख्य अतिथि जी को स्मृति चिन्ह' के रूप में एक शॉल भेंट की।

अध्यक्ष जी ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे सौभाग्यशाली हैं जो इस गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। यहां वेदों का ज्ञान व सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा मिलती है जिससे आध्यात्मिक व भौतिक विकास होता है। कुलपति जी ने धार्मिक व आध्यात्मिक पुस्तकें भेंट कर सभापति जी को सम्मानित किया।

कुलपति महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल ने सम्पूर्ण सभा को इस पवित्र दिवस पर बधाई दी और ब्र. को आशीर्वाद देते हुए कहा कि हमें गुरु के प्रति श्रद्धा-भाव रखना चाहिए तथा उनके बताए मार्ग पर चलना चाहिए। गुरुकुल की अधिष्ठात्री डा. सुमन जी शारदा ने सभा में उपस्थित आर्य बन्धुओं का धन्यवाद किया। शान्ति गीत के साथ सभा सम्पन्न हुई।

परीक्षा परिणाम दसवीं 2012-13

कुल परीक्षार्थी=28, उत्तीर्ण परीक्षार्थी=28, प्रथमश्रेणी=28

परीक्षार्थियों की संख्या 90 प्रतिशत से 94.7 प्रतिशत प्राप्त अंक=14, परीक्षार्थियों की संख्या 81 प्रतिशत से 89.38 प्रतिशत प्राप्त अंक=12, परीक्षार्थियों की संख्या 75.38 प्रतिशत से 78.61 प्रतिशत प्राप्त अंक=2

नाम	प्राप्त अंक	प्रतिशत	राज्य में स्थान
ज्योति कुमारी	616/650	94.77	12
अदिति कुमारी	613/650	94.31	15
सोनिका भारती	612/650	94.15	16
ज्योति कुमारी	608/650	93.54	20
स्वीटी कुमारी	605/650	93.08	23

वेदकथा का आयोजन

आर्य समाज, सागरपुर, दिल्ली द्वारा वेदकथा का भव्य आयोजन इस वर्ष दिनांक 05 से 08 सितम्बर 2013 को उत्पन्न हर्षोल्लास के साथ मन्दिर प्रांगण में किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. कुलदीप आर्य (बिजनौर) व उपदेशक आचार्य योगेन्द्र शास्त्री (होशंगाबाद) पधार रहे हैं। इस कार्यक्रम में पधार कर धर्मलाभ उठायें।

योग व यज्ञ पर प्रवचन

जयपुर के वैदिक विद्वान व समाज सेवी यशपाल 'यश' ने पंजतरणी बी.एस.एफ. शिविर में सीमा सुरक्षाबल के अधिकारियों से सम्पर्क किया। आर्य समाजी पृष्ठभूमि तथा वेद एवं योग के जानकर के नाते बी.एस.एफ.के. योग गुरु श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत ने योग-कक्षा में प्रवचन हेतु श्री यश को आमन्त्रित किया। अपने भाषण-प्रवचन एवं प्रदर्शन के माध्यम से ध्यानमुद्रा, सहज आसन, दीर्घा-गहन स्पर्श (ध्वनि सहित-रहित) लयन्वद्ध श्वास प्रश्वास, कोमलता से पलक उन्मीत दाँत व जबड़ों का विस्फारण एवं सहज स्थिति के लाभ समझाएं। अपने प्रवचन में यश ने विषम परिस्थितियों में भी धैर्य-संयम बरतने का परामर्श भी दिया। कुल मिला कर श्री यश के इस प्रयास को राष्ट्र, समाज और ऋषि के प्रति दायित्व निर्वहन ही कहा जाएगा।

निराश्रित बच्चे ईश्वर की बनाई साक्षात् मूर्तियां

निराश्रित बालक बालिकाएं भी ईश्वर की बनाई गई साक्षात् मूर्तियां हैं। इन्हें आपके प्यार दुलार की जरूरत है। कभी-कभी समय निकालकर निराश्रित बच्चों के बीच समय बिताएं। इनकी सेवा और सुश्रुषा करना ईश्वर भक्ति के समान है। यह विचार शनिवार को वीर सावरकर नगर स्थित निराश्रित बालगृह के बच्चों के बीच आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्डा ने व्यक्त किए।

योग विज्ञान शिविर सम्पन्न

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द जी के आदर्शो से प्रेरित होकर **'आर्य युवा समाज' डी.ए.वी. पटियाला** द्वारा पतंजलि योग समिति, पटियाला के सहयोग से डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पटियाला के प्रागंण में छह दिवसीय शिविर लगाया गया। प्राचार्य एस. आर. प्रभाकर के मार्गदर्शन में लगाये गये। इस शिविर में आर्य युवा समाज के प्रभारी व शिविर के संयोजक बिजेन्द्र शास्त्री ने लोगों को प्राणायाम, अनुलोम-विलोम, विभिन्न योगासन व ध्यान योग क्रियाएं करवाई। इसके साथ-साथ योग साधकों को विशेष रूप से जल व सूत्र नेती का अभ्यास भी करवाया गया। शिविर में एक दिन बच्चों के लिए विशेष रूप से रखा गया। जिसमें उन्हें योग के लाभ बताते हुए शरीर को स्वस्थ रखने के लिए प्रेरित किया गया तथा विभिन्न यौगिक क्रियाएं करवाई।

शान्ति यज्ञ का आयोजन

उत्तराखण्ड त्रासदी से आयी इस दु:ख की घड़ी में सम्पूर्ण देश दु:खी है और व्याकुल है इस दु:ख से उभरने के लिए व दु:खी जनों की सहायता के लिए **डी.ए.वी. पुलिस पब्लिक स्कूल सुनारिया (रोहतक)** ने नम आँखों से शान्ति यज्ञ का आयोजन किया। जिसमें प्राचार्या महोदया श्रीमती अनीता कत्याल जी की अध्यक्षता में छात्रों ने व छात्रों के अनेक अभिभावकों ने इस शान्ति यज्ञ में अपनी श्रद्धासुमन आहुति अर्पित की, जिसमें यज्ञ पुरोहित अशोक कुमार आर्य जी ने उपस्थित अभिभावकों द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति दिलवाई व सभी ने मिलकर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि है! भगवान उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करना जो आज धरा पर नहीं है और उनकी शक्ति में बढ़ोत्तरी करना जिन्हें वो पीछे दु:खावस्ता में छोड़ गये ताकि वे इस दु:ख की घड़ी का सामना कर सके।

सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा-पारितोषिक वितरण समारोह

ऋषिकृत गन्थों, विद्वजनों की पुस्तकों के स्वाध्याय से जहां मनुष्य अपने सर्वागीण विकास का मार्ग खोलता है वहां अपनी विश्वगुरु वैदिक संस्कृति से परिचित होकर देश, धर्म जाति की सेवा में तत्पर भी होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती विरचित कालजयी अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय की जन सामान्य विशेषत युवा वर्ग की रूचि जागृत करने के उद्देश्य से **जिला वेद प्रचार मण्डल, सोनीपत** की ओर गत मास प्रान्तीय स्तर पर सोनीपत, फरीदाबाद, गुड़गांव, रोहतक, हिसार, करनाल के विभिन्न छ: केन्द्रों पर सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें युवक/युवतियां, महिलाओं, पुरुष वर्ग ने भाग लिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान आचार्य बलदेव जी सानिन्ध्य में इन विजेताओं का अभिनन्दन किया गया।

गायत्री महायज्ञ एवं वेद प्रचार

आर्य समाज अंधेरी, मुम्बई के तत्वावधान में गायत्री महायज्ञ एवं वेद प्रचार का आयोजन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें आचार्य शिवदत्त पाण्डेय, वेद वेदांग, विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम द्वारा प्रवचन दिये गये और श्री प्रभाकर शर्मा एवं श्री योगेश आर्य द्वारा मधुर भजन प्रस्तुत किये गये, जिनका पधारे हुए आर्य जनों ने लाभ उठाया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी मेधानन्द सरस्वती जी की पावन स्मृति में गुरुकुल सेवा निधि सम्मान आचार्य शिवदत्त पाण्डेय जी को दिया गया।

आयु वृद्ध लोगों ने किया यज्ञ

श्री सीनियर सिटीजन फोरम, मानसरोवर, जयपुर प्रतिमास की अंतिम तिथि को डे.केयर सेन्टर में वैदिक यज्ञ एवं प्रवचन का आयोजन करता है। जुलाई में सम्पन्न यज्ञ में ब्रह्मा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष यशपाल बने। अपने उद्बोधन में यशपाल यश ने कहा कि मन, वचन, कर्म द्वारा किसी का अधिकार हनन न करना तथा स्वतन्त्रता का हरण न करना, संताप न पहुँचाना ही अहिंसा है व मुक्ति के लिए सोपान है।

महात्मा कन्हैया लाल महता विद्यार्थी अवार्ड दिवस

महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान, फरीदाबाद के संस्थापक महात्मा कन्हैया लाल महता जी का जन्म दिवस 15 जुलाई विद्यार्थी अवार्ड दिवस के रूप में महिला महाविद्यालय में अत्यन्त श्रद्धा एवं सादगी से मनाया गया।

कार्यक्रम के मुख्यातिथि आचार्य बलदेव जी महाराज थे। उन्होंने स्वर्ण पदक से सम्मानित सी.बी.एस.ई. की परीक्षा में पूजा नरूला सुश्री ज्योति तथा सर्वश्रेष्ठ आर्यवीर के लिए मास्टर सुन्दर और आर्य वीरांगना के लिए सुश्री तबस्सुम को नवाजा। अन्य गणमान्य अतिथियों में आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा से आचार्य विजयपाल जी महाराज, ओ३म योग संस्थान से योगिराज ओ३म प्रकाश रहे। के.एल. महता विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अपने संस्थापक के प्रति सुन्दर श्रद्धागीत प्रस्तुत किए। अपने उद्बोधन में बलदेव जी महाराज ने विद्यार्थियों की आध्यात्मिक शिक्षा पर बल देते हुए सभी को मेडिटेशन के लिए प्रेरित किया।

कन्हैयालाल आर्य जी को पितृ शोक

अपने जीवन के 94 वसन्त देखने के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के वरिष्ठ उपप्रधान एवं आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव के प्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य के पिता श्री रामचन्द्र आर्य लम्बी बीमारी के पश्चात स्वर्ग सिधार गए। श्री रामचन्द्र आर्य एक निष्ठावान समाजसेवी एवं स्पष्टवक्ता थे। गुड़गांव व गुड़गांव से बाहर कोई ऐसी संस्था नहीं जिसे वह अपनी पवित्र कमाई से सहयोग न करते हों।

श्रद्धांजलि सभा का प्रारम्भ यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यदेव शास्त्री जी के शान्ति यज्ञ द्वारा हुआ। श्री नरेन्द्र आर्य वशिष्ठ के प्रभु भक्ति के भजन हुए। श्री अशोक शर्मा वरिष्ठ साहित्यकार ने श्रद्धांजलि सभा का संचालन किया। श्रद्धांजलि सभा में आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी, संत पधारे हुए थे।

टंकारा ट्रस्ट परिवार उस महान आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

चुनाव समाचार

आर्य समाज, रामनगर, गुड़गांव, हरियाणा
प्रधान- श्री ओम प्रकाश चुटानी **मन्त्री**- श्री राधाकृष्ण सोलंकी
कोषाध्यक्ष- श्री ईश्वर लाल कुमार

आर्य समाज गोमती नगर, लखनऊ, उ.प्र.
प्रधान- श्री मनोज कुमार मिश्र **मन्त्री**- श्री अशोक कु. साहू
कोषाध्यक्ष- श्री वासुदेव वर्मा

आर्य समाज कर्णपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड
प्रधान- श्री वेद प्रकाश वर्मा **मन्त्री**- श्री खुशहाल सिंह स्नेही
कोषाध्यक्ष- श्री रामबाबू सैनी

आर्य समाज विज्ञान नगर, कोटा, राजस्थान
प्रधान- श्री जे एस दुबे **मन्त्री**- श्री राकेश चड्डा
कोषाध्यक्ष- श्री कौशल रस्तोगी

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद्,119 गुरुकुल, गौतमनगर, दि.
प्रधान- श्री सत्यपाल 'मधुर' **मन्त्री**- डॉ. कैलाश 'कर्मठ'
कोषाध्यक्ष- श्री नरेशदत्त आर्य

आर्य समाज, वाशी, नवी मुम्बई
प्रधान- श्री राज कुमार दीवान **मन्त्री**- श्री राज कु. भगवती
कोषाध्यक्ष- श्री हरिपाल सिंह

आर्य समाज, रामनगर, रूडकी, जिला हरिद्वार, उत्तराखण्ड
प्रधान- श्री मदनपाल शर्मा **मन्त्री**- श्री रामेश्वरप्रसाद सैनी
कोषाध्यक्ष- श्री जे.डी. त्यागी

आर्य समाज हरिनगर, नई दिल्ली
प्रधान- श्रीमती राजेश्वरी आर्या **मन्त्री**- श्री श्रीपाल आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री सुभाष मल्होत्रा

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली
प्रधान- श्री इन्द्रसेन साहनी **मन्त्री**- श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा
कोषाध्यक्ष- श्री प्रताप गुलयानी

(पृष्ठ 2 का शेष)

ज्ञान चक्षु खुल गये और उसने स्वामी जी के चरण पकड़कर कहा महाराज। आप मेरी आंखे खोल दी। 'महाराज-कर्म धर्म को अति प्रधानता देते थे। पर हितार्थ क्रियात्मक जीवन, यह सब उनकी बहुत बड़ी महानता थी। ऋषि का लक्ष्य मनुष्य मात्रको यह ज्ञान कराना था कि वह शरीर नहीं, शरीर का स्वामी 'आत्मा' है, आत्मतत्व को जान, ईश्वर का निरन्तर सान्निध्य प्राप्त कर मनुष्य सच्चे अर्थो में मनुष्य बनता है 'ज्ञान' का उद्देश्य आत्मतत्व की प्राप्ति मार्ग निर्देशन है।

हम संसार के सब अच्छे कर्मो को करते हुए उस ऐश्वर्य का संग्रह करें जो धरती से विदा होते हुए साथ जा सके। नारी जाति को ऋषि पूजनीय मानते थे। उन्होंने 5000 वर्षो के वाद सबल स्वरों में यह घोषित किया-**'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता।।'** ईश्वर, जीव और प्राकृति को अनादि मानते हुए, जीवों को भोक्ता, प्रकृति को साधना और ईश्वर से नित्य आनन्द प्राप्त करना जीव का लक्ष्य निरन्तर कर्म करते हुए प्रभु की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहना मानवता है। मूर्ति पूजा, अवतारवाद, छूत-छात, गुरुडम और अन्धविश्वास, फलित ज्योतिष आदि मत मतान्तरों के ऋषि प्रबल विरोधी थे और वे उन्हें मनुष्य जाति के पतन का कारण मानते थे। ऋषि के बाद पहले के संन्यासी, महात्माओं के न रहने से आर्य समाज की प्रगतिन्यून हो गई है और ब्राह्मणवाद की पौराणिकता प्रतिभा पूजन वेद विरूद्ध परम्पराओं का आस्था आदि चैनलों पर काफी प्रचार किया जा रहा है। वैदिक ज्ञान से रहित लोग सोने चांदी के अलंकार एवं लाखों लाखों की नगदी प्रतिमा पर न्यौछावर कर रहे हैं। इसके अलावा पीस टी.वी. इस्लामी चैनल द्वारा वेद शास्त्रों की मनमानी व्याख्या कर धर्मान्तरण किया जा रहा है। दुष्प्रचार के इस अंधकूप में पढ़े लिखे प्रबुद्ध जन सही दिशा एवं ज्ञान के अभाव में प्राचीन वैदिक आर्य परम्परा से दूर होते जा रहे हैं। आवश्यकता है कि आर्यसमाज का भी एक टी.वी. चैनल हो, जिसमें एक या आधा घंटा के लिए दैनिक वैदिक धर्म का प्रचार होता रहे।

– मु. पो.-मुरारई, जिला-वीरभूम (पश्चिम बंगाल)

आर्य समाज में परिन्डे बांधे

भीषण गर्मी में प्यास से भटकते पक्षियों के लिए पेड़ों पर व घरों की बालकनियों पर भी मिट्टी के परिन्डे बांध कर उनमें पानी भरना पुण्य का काम है। **आर्य समाज जिला सभा, कोटा** की ओर से जिला प्रधान अर्जुन देव चड्डा, डा. के.एल. दिवाकर, जे.एस. दुबे, सुमेश कुमार गांधी, श्योराज वशिष्ठ, दिनेश शर्मा, मनोहर लाल शर्मा ने आर्य समाज विज्ञान नगर में मिट्टी के परिन्डे बांधे सभी ने परिन्डों में नियमित पानी भरने का संकल्प लिया।

चिकित्सा एवं जांच शिविर आयोजित

स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य, संस्थापक **आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर** के 93वें जन्म दिवस के अवसर पर आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के तत्वावधान में जन सहयोग से आठ दिवसीय नि:शुल्क चिकित्सा एवं जाँच शिविर का आयोजन स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पीटल अलवर में किया गया जिसमें सैकड़ों महानुभावों ने पधारकर शिविर का लाभ उठाया।

अंकुरित अनाज व गेहूं के जवारे

❒ डा. हीरालाल छाजेड़

प्रकृति ने मानव को अनेक अनमोल उपहार प्रदान किए हैं, जिनका सही उपयोग कर मनुष्य स्वस्थ एवं दीर्घायु बन सकता है। आज के मंहगाई के युग में अल्पाहार (नाश्ता) की प्लेट और भोजन की थाली में गरीब और मध्यम वर्ग के घर में पोषक तत्वों का अकाल होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में अंकुरित आहार और गेहूं के जवारे का रस महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा में अंकुरित आहार व गेहूं के जवारे को जीवित भोजन के रूप में मान्यता दी गई है। इसका कारण है अंकुरित आहार की प्रकृति क्षारीय (एम्लाइन) होती है। प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार हमारे भोजन का एक चौथाई भाग क्षारीय होना चाहिए जो कच्चे भोजन या अंकुरित आहार द्वारा संभव है। अंकुरित आहार व जवारे का प्रयोग अमीर गरीब सभी वर्गो के लिए सहज उपलब्ध व उपयोगी है।

मूंग, मोठ, बाजरा, चना, सोयाबीन, गेहूं, जौ, जई, मैथी, सूरजमुखी आदि किसी भी जीवित बीज का उपयोग किया जा सकता है। आधुनिक युग में हमारे भोजन में जंक फूड, फास्ट फूड तथा कार्बोनेटेड पेय पदार्थों की बढ़ती संख्या व निर्भरता से हमारे स्वास्थ्य से संबंधित अनेक समस्याओं का सूत्रपात तथा सबसे बड़ी समस्या मोटापा का प्रमुख कारण होता है। हमारी अस्वस्थता का प्रमुख कारण गलत तरीके से पकाया भोजन, हमारी अव्यवस्थित जीवन शैली व नकारात्मक विचार है। भोजन के विषय में यह एक सामान्य प्रामाणिक व स्वीकृत तथ्य है कि भोजन जितना प्राकृतिक अवस्था में होगा उतना ही स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होगा। इस दृष्टि से अंकुरित आहार सबसे अधिक कसौटी पर खरा उतरता है। पौष्टिकता के साथ-साथ स्वादिष्ट व सुपाच्य भी होता है।

अंकुरित आहार को औषधि के रूप में भी स्वीकार किया गया है। इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन तथा खनिज लवण भी प्रचुर मात्रा में होने से संपूर्ण आहार माना जाता है। नियमित एक कटोरी इसका उपयोग करने पर वृद्धावस्था में भी विटामिन की गोलियां खाने की आवश्यकता नहीं रहती व सदाबहार बन सकते हैं।

गेहूं के ज्वारे: अंकुरित आहार की तरह जवारों में सबसे प्रमुख तत्व क्लोरोफिल पाया जाता है। प्रसिद्ध आहारशास्त्री डा. बशर के अनुसार, क्लोरोफिल को केन्द्रित सूर्य-शक्ति कहा है। क्लोरोफिल और हिमोग्लोबिन में काफी समानता है, इसलिए गेहूं के जवारों के हरे रस को हरे रक्त कहना भी अतिशयोक्ति नहीं है। गेहूं के जवारों में रोग-निरोधक व रोग निवारक शक्ति का भंडार है। कई रोग विशेषज्ञ इसे प्राकृतिक परमाणु भी कहते हैं इसके सेवन से रोगी नीरोगी दोनों की जीवन शक्ति में अपार वृद्धि होती है व थकान नहीं आती, स्फूर्ति का संचार होता है। गेहूं के जवारों से निकाला हुआ रस (प्रतिदिन एक कप) अनेक बीमारियों में लाभप्रद माना जाता है, यथा रक्त की कमी, रक्त संचार संबंधी रोगों, चर्म रोग, आंतों में सूजन, सेक्स संबंधित रोग, शीघ्र पतन, सर्दी, साइनस, अस्थमा व पाचन संबंधी अनेक रोगों के लिए लाभदायक है। अनेक पोषक तत्व व रोग निवारण गुण से सम्पन्न होने के कारण इसे अमृत का दर्जा मिला है।

अंकुरित आहार कैसे तैयार करें? इसके तैयार करने की विधि अति सरल है। विभिन्न दालों व अनाज को साबुत अवस्था में रगड़ कर अच्छी तरह पानी में साफ धो लें। फिर साफ पानी में भिगो कर रख दें। गर्मियों में बारह घंटे व सर्दियों में 24 घंटे तक भीगने पर बीज अंकुरण के लिए तैयार हो जाते हैं। इन बीजों को सफेद कपड़े की पोटली में बांधकर लटका दें ताकि अपेक्षित गर्मी मिल सके। अंकुरित अन्न को ताजा-ताजा ही प्रयोग में लाना अच्छा रहता है। बच्चे, बूढ़े, जवान सभी के लिए उपयोगी है।

गेहूं के दाने मिट्टी के गमलों में आठ दस दिन (बवाई करने के बाद) में सात आठ इंच लम्बे जवारों का जूस बनाकर विभिन्न रोगों में लिया जाता है, जिसे 'ग्रीन ब्लेड थैरेपी' के नाम से भी जाना जाता है।

ऊर्जावान् व पूर्ण स्वस्थ रहने के लिए आहार के प्रति हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन अपेक्षित है। जीभ के स्वाद के स्थान पर भोजन को अधिकाधिक शरीर के लिए उपयोगी बनाने पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। तभी हम रोगमुक्त बनने में सक्षम हो सकते हैं। पौष्टिकता के लिए कच्चे अनाज का महत्वपूर्ण स्थान माना गया है। बार-बार गर्म करने से पौष्टिक तत्व नष्ट हो जाते हैं।

Important Day

'The two most important days in your life are the day you are born.... and the day you find out why.'

टंकारा समाचार सितम्बर, 2013
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel R.M.S. on 1/2-09-2013
R.N.I. No 68339/98

एम.डी.एच

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 दूरभाष : 41548504 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय